HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

अहर्निशं जागरणीयम् लोकहितं मम करणीयम्

मातृवन्दना

ज्येष्ठ-आषाढ़, युगाब्द 5121, जून 2019

विश्वास की सरकार

मूल्यः 20/- प्रति

हिम सिने सोसाईटी (रजि.) व हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में कुलपति समिति कक्ष में आयोजित एक दिवसीय फिल्म एप्रीसिएशन कार्यशाला की झलकियां

फिल्म एप्रीसिएशन कार्यशाला में मंच पर विख्यात प्रसिद्ध फिल्म निर्माता निर्देशक सुदीप्तो सेन, प्रो. बी.के. कुठियाला अध्यक्ष हरियाणा उच्च शिक्षा आयोग व भारतीय चित्र साधना, गुरू नानक देव विश्वविद्यालय की जनसंचार विभाग अध्यक्ष डॉ. नम्रता जोशी, हि.प्र.वि.वि. के आचार्य गण कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को मार्गदर्शन देते हुए।

वर्ष:19 अंक : 06 | ज्येष्ठ-आषाढ़, कलियुगाब्द 5121, जून 2019

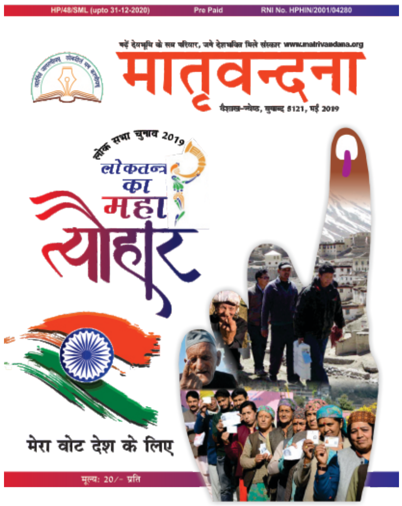

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

दलेल सिंह ठाकुर
मीनाक्षी सूद
नीतू वर्मा
डॉ. अर्चना गुलेरिया

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय:

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com, Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक: कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सविता प्रेस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	लोकतंत्र की स्थिर सरकार	5
प्रेरक प्रसंग	आत्मविश्वास की ऊंची पगड़ी	6
चिंतन	सर्वसमावेशक है हिन्दु	7
आवरण	परिवारवाद व जातिवाद	8
संगठनम्	उद्योगों के विकास हेतु	12
देश-प्रदेश	उत्तराखण्ड की पहली महिला	14
देवभूमि	हिमाचल में डेरी फार्मिंग	15
विविध	देश को फिर स्थिर सरकार	16
कृषि जगत	केसर की खेती से लहलहाए	18
धर्म व अध्यात्म	छान्दोग्योपनिषद्	20
पर्यावरण	पर्यावरण समस्या समाधान में	21
दृष्टि	चुराह में पांच पीढ़ियों	22
काव्य जगत	परिवार की धुरी मां	23
स्वास्थ्य	मधुमेह से बचाएगा काला गेहूं	25
प्रतिक्रिया	बोर्ड की परीक्षाओं से छात्रों में	26
महिला जगत	मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी	27
विश्वदर्शन	प्राणायाम से बच्चों की मानसिक	28
घूमती कलम	द्राभल जंगल को बचाने के लिए	30
समसामयिकी	अंधकार में डूबे लोगों को थमाई	32
बाल जगत	मंत्री का सुरमा राज	33

पाठकीय

संपादक महोदय,

लोकसभा चुनाव 2019 के परिणामों ने लोकतन्त्र में जनता की ताकत को दिखाया है। अब समय बदल गया है। भारत नए युग में प्रवेश कर गया है। तुष्टिकरण, जातिवाद और दुष्प्रचार की राजनीति करने वाले नेता व उनके दलों को जनता ने सबक सिखाया है। जनाधार खिसकता देख अपने अस्तित्व बचाने के लिए गठबंधन, वोटिंग मशीनों को निशाना बनाकर देश में भ्रम की स्थिति निर्माण के प्रयास हुए। संवैधानिक संस्थाओं को चुनौती देकर तहस – नहस करने की भी कोशिशें की गई। जनता ने इन सब कुप्रयासों पर अपने मत से करारी चोट की है। विशेषकर युवा मतदाताओं नेअपनी निर्णायक भूमिका निभाई है। चुनाव परिणाम की तस्वीर जैसे जैसे स्पष्ट होती गई, वैसे वैसे वोटिंग मशीनों पर रोना रोने वालों का रुदन भी कम हो गया । हिंसा की धमकी देने वाले नेताओं के तेवर भी जनमत के सामने ठण्डे पड़ गए। यही तो लोकतंत्र की ताकत है लोकतंत्र की खूबसूरती है। बढ़ते मतदान प्रतिशत ने भारत की जीत सुनिश्चित की है। भारत को एक स्थिर और बहुतमत की सरकार बनाने के रास्ता प्रशस्त हुआ है। मोदी के नेतृत्व में एक बार फिर देश आगे बढ़ेगा। अब उम्मीद की जानी चाहिए कि नई सरकार और अधिक जबाबदेही के साथ जनाकांक्षाओं को पूरा करने में सफल होगी । **जोगिन्द्र सिंह ठाकुर** ◆◆◆

महोदय,

आशा की एक किरण ...30 साल बाद !! चुनाव के असंख्य घात-प्रतिघातों के बीच युगों बाद एक आशा की किरण इस रूप में दिखाई पड़ी है, कि कश्मीर में एक पूर्व व्यवसायी 74 वर्ष के पण्डित रोशनलाल मावा ने 30 वर्षों बाद अपनी बन्द दुकान को दुबारा खोला है। 30 वर्ष तक अपनी मातृभूमि से दूर हो कर पल-पल तड़पने की पीड़ा आप चाह कर भी नहीं समझ सकते। अपनी जड़ों से कटने की पीड़ा वही जानता है जिसकी जड़ें काट दी गयी हो। पण्डित रोशनलाल मावा और उनके जैसे दस लाख लोग देश के अन्य हिस्सों में बैठ कर अपनी मातृभूमि की ओर किस ललचाई और कातर दृष्टि से देखते होंगे यह वही जानते हैं। अखबार वालों ने लिखा है कि दुकान खोलते समय रो पड़े पण्डित रोशनलाल... विवाह के छह महीने बाद ही मायके लौटने वाली लड़कियाँ माँ से लिपट कर फूट-फूट कर रोने लगती हैं, रोशनलाल तो तीस वर्ष बाद लौटे थे। कैसे न रोते? मैं नहीं जानता कि रोशनलाल जी की घर वापसी से मुझे कितना उत्साहित होना चाहिए। मैं नहीं जानता कि उनको देख कर कल कितने लोग वापस अपने घरों की ओर लौटेंगे। मैं यह भी नहीं जानता कि कल वापस लौटने वालों में कितनों को उनका घर वापस मिलेगा... पर मैं इतना जानता हूँ कि कश्मीर में एक आशा तो जगी है। कश्मीर में किसी रोशन लाल की घर वापसी इस सदी का सबसे सुंदर समाचार है। इसका स्वागत होना चाहिए। जैसे इनके दिन लौटे वैसे उन दस लाख लोगों के भी दिन लौटें... ईश्वर...कश्मीर में मिठाई की दुकान उस कश्मीरी बूढ़े ने खोली है, पर इस खुशी में मिठाई आज यह बिहारी खायेगा। बना रहे मेरा देश। ◆◆◆ **सर्वेश तिवारी श्रीमुख गोपालगंज, बिहार।**

जून माह के शुभ मुहूर्त

8 जून 2019 शनिवार 22.59 से 29.6 मघा षष्ठी, सप्तमी
9 जून 2019 रविवार 05.26 से 15.49 मघा सप्तमी
10 जून 2019 सोमवार 14.21 से 29.26 उत्तरा फाल्गुनी अष्टमी, नवमी
12 जून 2019 बुधावार 06.08 से 11.51 हस्त दशमी
13 जून 2019 गुरुवार 25.23 से 29.27 स्वाती द्वादशी
14 जून 2019 शुक्रवार 05.27 से 10.17 स्वाती द्वादशी
15 जून 2019 शनिवार 10.00 से 29.27 अनुराधा त्रयोदशी, चतुर्दशी
16 जून 2019 रविवार 05.27 से 10.07 अनुराधा चतुर्दशी
17 जून 2019 सोमवार 17.00 से 29.27 मूल प्रतिपदा
18 जून 2019 मंगलवार 05.27 से 11.51 मूल प्रतिपदा
19 जून 2019 बुधवार 13.30 से 18.58 उत्तरा आषाढ़ द्वितीया, तृतीया
25 जून 2019 मंगलवार 05.28 से 29.29 उत्तरा भाद्रपद अष्टमी, नवमी
26 जून 2019 बुधावार 05.29 से 23.50 रेवती नवमी

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें
0177-2836990, 7650000990
ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को शिवाजी राज्याभिषेक दिवस व संत कबीर जयंती की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (जून)

विश्व पर्यावरण दिवस	05 जून
ईद-उल-फितर	05 जून
महाराणा प्रताप जयंती	06 जून
निर्जला एकादशी	13 जून
शिवाजी राज्याभिषेक दिवस	15 जून
संत कबीर जयंती	17 जून
योगिनी एकादशी	29 जून

लोकतंत्र की स्थिर सरकार

लोकतन्त्र के चुनाव रूपी महायज्ञ में देश के सभी मतदाताओं ने आहुतियाँ अर्पित कर भारत के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए अपने ईष्ट को प्राप्त कर लिया है। न केवल विपक्ष अपितु समस्त भारत और विश्व को चौकीदार ने चौंका दिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने प्रचण्ड बहुमत से जीत हासिल कर ली है। कांग्रेस सहित सारा विपक्ष, गठबन्धन और महागठबन्धन बनाकर मोदी को पटखनी देने के लिए एकजुट होकर पूरे देश में स्वयं को सत्ता के शीर्ष पर बैठने के लिए लालायित था। सभी विपक्षी दलों का शीर्ष नेतृत्व जहाँ मोदी को प्रधानमंत्री पद से हटाने में एकमत था वहाँ दूसरी ओर प्रधानमन्त्री पद के लिए अपनी दावेदारी पेश न करते हुए भी अप्रत्यक्ष रूप में उस पद की प्राप्ति के लिए सुअवसर की तलाश में था। भारत का जागरूक मतदाता जान चुका था कि एक ओर वह महान व्यक्तित्व है जिसने विगत पांच वर्षों में अपने जीवन का एक-एक क्षण राष्ट्र हित में समर्पित किया है दूसरी ओर बिखरा हुआ वह विपक्ष है जो केवल मोदी के राष्ट्र हित में उठाये गये कदमों को अनदेखा कर केवल उसकी आलोचना करने में तत्पर है।

निश्चय से मोदी को तभी स्पष्ट जनादेश प्राप्त हुआ है जबकि उन्होंने जमीनी स्तर पर भारत की गरीब एवं आम जनता की जरूरतों को पहचानने का प्रयास किया और उनको बुनियादी सुविधाएँ देने के लिए नई योजनाऐं बनाई। विगत छह दशकों में कांग्रेस के कार्यकाल में जिन योजनाओं के बारे में सोचा तक नहीं गया, ऐसी नई योजनाओं को निर्माण कर उनके क्रियान्वयन की पूर्ण व्यवस्था की। सुखद परिणाम प्रधानमंत्री के विगत कार्यकाल में मिलने प्रारम्भ हो गये थे। इनमें स्वच्छ भारत योजना के अन्तर्गत शौचालय निर्माण, उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, जन-धन योजना, फसल बीमा योजना, आयुष्मान भारत, युवाओं के लिए स्वरोजगार हेतु सहजता से ऋण उपलब्ध करवाना, कौशल और नई सोच बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देना, हर घर के लिए बिजली उपलब्ध करवाना आदि ऐसी अनेक योजनाएँ हैं जिनसे मोदी ने 28 करोड़ जनता को गरीबी रेखा से ऊपर उठाने के लिए सार्थक कदम उठाये हैं और युवावर्ग को भी अपने कदमों पर खड़ा होने के लिए प्रोत्साहित किया है। घोषणाओं में आर्थिक आधार पर 10 प्रतिशत आरक्षण, किसानों के लिए प्रतिवर्ष 6000/- सहायता राशि प्रदान करने से भी आम जनता को यह विश्वास उत्पन्न हो गया है कि मोदी की नीतियों के क्रियान्वयन में और सफल परिणामों में भले ही थोड़ी देर हो जाये किन्तु उनकी नीयत साफ है और उनके हर कार्य में जन हित और राष्ट्र हित परिलक्षित होता है। कड़े निर्णय जैसे नोटबन्दी, जीएसटी, सर्जिकल स्ट्राईक, आदि सुदृढ़ इच्छा शक्ति को दर्शाते हैं। उनके पहले कार्यकाल में भारत की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ हुई है। पूर्व की केन्द्र सरकार भ्रष्टाचार मुक्त रही, राष्ट्रीय सुरक्षा को अधिमान दिया गया। विदेश-नीति को नये आयाम दिये गये ओर अन्तरिक्षा विज्ञान में सराहनीय तरक्की की गई।

विपक्ष ने चुनावी प्रचार में मोदी के प्रति अनर्गल प्रलाप कर अपनी हार की कहानी स्वयं लिख दी थी। राहुल, ममता, माया और अखिलेश द्वारा चौकीदार चोर के नारे को जनता नहीं पचा पाई। राजनीति में इतनी गिरावट पहले कभी नहीं देखी गई। आरोप-प्रत्यारोप पर ही चुनाव प्रचार आधारित रहा, किन्तु इस चुनाव से सभी राजनीतिक दलों को यह सबक अवश्य मिला कि जनहित और राष्ट्रहित ही सर्वोपरि है। जात-पात, धर्म, तुष्टिकरण, परिवारवाद, भेद-नीति और स्वार्थवश गठबन्धन पर अब राजनीति नहीं चलने वाली। ईमानदारी से ही देश की जनता का विश्वास जीता जा सकेगा। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में नई केन्द्रीय सरकार को बधाई देते हुए हम आशान्वित हैं कि अपने घोषणा पत्र के अनुसार सभी वायदों को पूरा करने में यह सरकार खरी उतरेगी। अन्त में -

उम्मीदों की बंजर ज़मीन इन्होंने है खोदी ।
फसलें अवश्य उगाएंगे नरेन्द्र भाई मोदी ॥

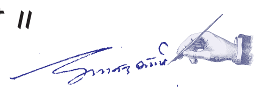

आत्मसम्मान की ऊंची पगड़ी

पगड़ी किसी भी सिख के लिए धार्मिक आस्था और आत्मसम्मान का प्रतीक है। इसे यूं ही सार्वजनिक तौर पर सिर से उतारना या फिर खोलना वर्जित है, लेकिन दक्षिण कश्मीर में जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित अवंतीपोर में एक सिख युवक ने अपनी पगड़ी से न सिर्फ एक महिला की जान बचाई बल्कि उसने सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल भी कायम कर दी। अवंतीपोर में तेजगति से आ रहे ट्रक ने एक महिला को टक्कर मार दी। महिला खून से लथपथ होकर सड़क पर गिर पड़ी। ट्रक चालक अपने वाहन समेत मौके से फरार हो गया। सड़क पर तमाशबीनों की भीड़ जुट गई। महिला के शरीर से लगातार खून बह रहा था और कोई मदद के लिए आगे नहीं बढ़ रहा था। इसी दौरान भीड़ में से एक 20 वर्षीय सिख युवक मंजीत सिंह निकला। उसने तुरंत पगड़ी उतारी और बिना देर किए महिला के घावों पर बांधना शुरू कर दिया। उसने पगड़ी को पट्टी की तरह महिला के जख्मों पर लपेटकर खून को रोका और फिर अन्य लोगों को मदद के लिए तैयार कर महिला को अस्पताल पहुंचाया। डॉक्टरों ने कहा कि अगर समय रहते महिला के बहते खून का बहाव न रोका जाता तो उसकी मौत निश्चित थी। फिलहाल, महिला अस्पताल में उपचाराधीन है और उसकी हालत स्थिर बताई बताई जा रही है। देवर त्राल के रहने वाले मंजीत सिंह ने कहा कि मैंने जब भीड़ देखी तो रूक गया। वहां महिला की हालत देखकर मुझसे रहा नहीं गया। पगड़ी हम सिखों की आस्था और शान है। लेकिन अगर महिला यूं सड़क पर मर जाती तो फिर यह शान और आस्था कहां रहती। वैसे भी हमें जरूरतमंदों के लिए अपना सर्वस्व कुर्बान करने की शिक्षा हमारे गुरूओं ने दी है। मंजीत सिंह की इस भावना की सभी सराहना कर रहे हैं। ◆◆◆

स्वामी विवेकानन्द के सफलता के सूत्र

एक बार स्वामी विवेकानन्द के पास एक आदमी आया जो बहुत उदास और परेशान था। उसने विवेकानंद से कहा कि मैं हर काम मन लगा के पूरी मेहनत के साथ करता हूं। लेकिन उसमें कभी पूरी तरह से कामयाब नहीं हो पाया। मेरे साथ के कई लोग उस काम को पूरा करके मुझसे आगे निकल चुके हैं लेकिन मैं कहीं न कहीं अटक जाता हूँ। मुझे मेरी समस्या का कोई समाधान बताएं। विवेकानंद बोले जाओ पहले मेरे पालतू कुत्ते को घुमाकर लाओ। तुम्हें तुम्हारे सवाल का जवाब मिल जायेगा।

कुछ देर बाद जब वह आदमी कुते को लेकर वापस आया तो उसके चेहरे पर अब भी उत्सुकता और स्फूर्ति थी जबकि कुत्ता पूरी तरह से थक चूका था। विवेकानंद ने उस व्यक्ति से पूछा कि तुम अब भी नहीं थके लेकिन यह कुत्ता कैसे इतना थक गया। वह बोला स्वामी जी मैं तो पूरे रास्ते सीधा चलता रहा लेकिन यह कुत्ता गली के हर कुत्ते के पीछे भोंकता और भागता और फिर मेरे पास आ जाता। इसलिए समान रास्ता होने के बावजूद यह मुझसे ज्यादा चला और थक गया। विवेकानन्द ने कहा इसी में तुम्हारे सवाल का जवाब है। तुम और एक सफल व्यक्ति दोनों एक संमान रास्ते पर चलते हैं और बराबर मेहनत करते हैं लेकिन तुम बीच बीच में अपनी तुलना दूसरों से करते हो, उनकी देखा देखी करते हो और उनके जैसा बनने और उनकी आदतें अपनाने की कोशिश करते हो जिसकी वजह से अपनी खासियत खो देते हो और रास्ते को लंबा बना कर थक जाते हो। यह थकान धीरे धीरे हताशा में बदल जाती है। इसलिए अगर किसी काम में पूरी तरह कामयाब होना चाहते हो तो उसे लगन और मेहनत के साथ अपने तरीके से करो न की दूसरे की देखादेखी से उनके साथ अपनी तुलना करके आप दूसरों से प्रेरणा ले सकते हैं या उनसे कुछ सीख सकते हैं लेकिन उनकी नकल, करके या उनसे ईर्ष्या करके अपनी रचनात्मकता को खोते हैं। दूसरों से कभी होड़ न लगाए। अपनी गलतियों से कुछ सीखें। सफलता और असफलता अपने आपमें कुछ भी नहीं है। सफल एक गरीब भी हो सकता है और असफल एक अमीर भी यह हमारा दृष्टिकोण तय करता है। इसलिए अपने लक्ष्य खुद बनाएं और उन पर सीधा चलें ताकि रास्ता लंबा न हो पाए। ◆◆◆

विश्व संवाद केन्द्र विदर्भ द्वारा आयोजित नारद जयंती कार्यक्रम में बोलते हुए सह सरकार्यवाह डॉ. मनमोहन वैद्य ने पत्रकारों से कहा

सर्वसमावेशक है हिन्दु

आप पत्रकार, लेखक, साहित्यकार हो सकते हैं पर भगवान नहीं, पूर्वाग्रह से ग्रसित और कान के कच्चे तो इन्सान भी नहीं हो सकते। अपनी बात मनवाने के लिए जो देशद्रोह तक जा सकते हैं ऐसे तोते पत्रकारिता एवं साहित्य जगत में किसी भी स्तर पर क्यों न पहुंच जाए कोई भी स्वस्थ एवं जागृत मस्तिष्क उनसे सहमत नहीं होगा क्योंकि जो व्यवहारिक नही वह मनुष्य ही नही है, लेखक व विचारक होना तो बहुत दूर की बात है। मेरा मानना है कि मर्यादा, मूल्यों व नियमों का नैतिक व्यवहार ही जीवन का आनन्द और वास्तविक उन्नति है।

'पत्रकारिता एवं साहित्य' के मंच पर अक्सर जहर उगलना कोई सोच कोई क्रांति नहीं किसी नागिन के मुंह लगने की मात्र निराशा व हताशा है। क्योंकि मतिभ्रम में व्यक्ति सच्चाई की राह छोड़कर हमेशा गलत रास्ता अपनाते हैं और ईर्ष्यावश अपराध के गर्त में समा जाते हैं। नकारात्मकता को नकारात्मकता सें समाप्त नहीं किया जा सकता, केवल सकारात्मकता ही नकारात्मकता को खत्म कर सकती है। घृणा को घृणा से, अन्धेरे से अन्धेरे को समाप्त नहीं किया जा सकता है। मेरा विश्वास है कि सत्य एकमात्र ऐसी शक्ति है जो कभी प्रभावित नहीं हो सकती। सकारात्मक सोचना या न सोचना यह हमारे दिमाग के नियंत्रण में है और हमारा दिमाग हमारे नियंत्रण में है। सब कुछ हमारे आचरण के आधार पर हैं क्योंकि सीढ़ियां हमेशा ऊपर की ओर नहीं जाती हैं। वर्तमान समाज में दुर्भाग्यवश जातिवाद, क्षेत्रवाद, असहनशीलता, अस्वीकृति, अनैतिकता, नशाखोरी, अश्लीलता, अहम एवं हिंसा की संकीर्ण भावनाएं स्पष्ट रूप से नजर आती हैं, इसलिए मेरा विचार है कि– 'आप तकनीकी रूप से सर्वश्रेष्ठ हो सकते हैं, अगर आप व्यवहारिक नहीं तो आप मानवता पर बोझ हैं।' ◆◆◆

सिनेमा सामाजिक कुरीतियों को करता है उजागर : सेन

शिमला। हिम सिने सोसायटी और एचपीयू पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग ने सिनेमा को जानने तथा मूल्यांकन को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया। हरियाणा उच्च शिक्षा आयोग एवं भारतीय चित्र साधना के अध्यक्ष प्रो. बीके कुठियाला ने सिनेमा मनोरंजन के साथ समाज की व्याप्त कुरीतियों को उजागर कर उसे खत्म करने वाला बताया। बताया कि इस माध्यम से संस्कृति और विचारों का विकास होता है। प्रख्यात फिल्म निर्माता निर्देशक उदिप्तो सेन ने सिनेमा को अपनाने के लिए सिनेमा का अभिन्न अग जनने की बात कही। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य (वेस्टर्न) सिनेमा की नकल न कर सभ्यता, संस्कृति एवं राष्ट्रीयता के विचारों को सिनेमा में लाना होगा। गुरु नानकदेव विवि के पत्रकारिता विभाग की अध्यक्ष डॉ. नम्रता जोशी ने भारतीय सिनेमा के इतिहास और बदलाव विषय की जानकारी दी। एचपीयू जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष एवं राज्यपाल के सलाहकार डॉ. शशिकांत शर्मा और हिम सिने सोसायटी के अध्यक्ष केशवदत्त श्रीधर ने कहा कि इसका मकसद छात्रों में फिल्म देखने की भावना सिनेमा के तुलनात्मक रवैये को अपनाकर प्रेरित करने की बात कही। ब्यूरो

एचपीयू में आज फिल्म ऐप्रीसिएशन वर्कशॉप

शिमला, 24 मई (ब्यूरो): हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय में शनिवार को एक दिवसीय फिल्म ऐप्रीसिएशन वर्कशॉप आयोजित की जाएगी। ये वर्कशॉप हिम सीने सोसायटी एवं हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित की जाएगी। वर्कशॉप विश्वविद्यालय समरहिल के समिति कक्ष में सुबह 9:30 बजे से ुरू होगी। हिम सीने सोसायटी के सचिव संजय सूद ने बताया कि पांच त्रों तक चलने वाली इस कार्यशाला में विख्यात फिल्म निर्माता-निर्देशक ुदिसो सेन, सिनेमा तकनीक व भारतीय सिनेमा व राष्ट्रीयता और सिनेमा रोल साउंड, कैमरा एंड एक्शन विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत करेंगे। इस अवसर पर अध्यक्ष उच्च शिक्षा आयोग हरियाणा व पूर्व उपकुलपति माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल और अध्यक्ष भारतीय चित्र साधना प्रोफेसर बी के कुठियाला सिनेमा सामाजिक बदलाव का माध्यम विषय पर अपना व्याख्यान देंगे। वहीं गुरु नानक देव विश्वविद्यालय पत्रकारिता विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. नम्रता जोशी भारतीय सिनेमा का इतिहास और इस में आए बदलाव के संबंध में कार्यशाला में जानकारी प्रदान करेंगे।

परिवारवाद व जातिवाद का त्याग कर राष्ट्रवाद को तरजीह

... -सुरेन्द्र कुमार

भाजपा को लोकसभा चुनाव 2019 के नतीजों में 300 से अधिक सीटें हासिल हुई हैं। जबकि पार्टी के सहयोगी गठबंधन एनडीए को 350 से अधिक सीटें हासिल करने का गौरव प्राप्त हुआ है। इन चुनावों में मोदी आंधी के समक्ष राहुल गांधी सहित अनेकों विरोधी धड़ाम से गिर गए। इस बार मतदाताओं ने परिवारवाद और जातिवाद को त्यागकर राष्ट्रवाद को तरजीह दी है।

मोदी! मोदी! का नारा आज पूरे विश्व में प्रसिद्ध होता जा रहा है। प्रधानमंत्री मोदी के नाम की पुकार आज दुनिया के कोने कोने में गूँज रही है। महासंग्राम 2019 के नतीजे भले ही भारत में घोषित हुए हों पर इनका असर दुनिया के प्रमुख देशों में सिर चढ़कर बोल रहा है। लोकसभा चुनावों में मिली ऐतिहासिक जीत के लिए प्रधानमंत्री मोदी को चीन, जापान, रूस, इजराइल, श्रीलंका, भूटान, अफगानिस्तान इत्यादि देशों के प्रमुखों के बधाई संदेश प्राप्त हो रहे हैं। जो दर्शाता है कि नरेंद्र दामोदर दास मोदी की छवि वक्त के साथ एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय लीडर के रूप में उभरती जा रही है।

वर्ष 2014 से पूर्व तीन बार गुजरात राज्य का मुख्यमंत्री रहना और अब लगातार दो बार दुनिया के प्रमुख लोकतांत्रिक देश की बागडोर प्रचंड बहुमत के साथ संभालना अपने आप में एक बेहद दुर्लभ कीर्तिमान है। अबकी बार भाजपा को लोकसभा चुनाव 2019 के नतीजों में 300 से अधिक सीटें हासिल हुई हैं। जबकि पार्टी के सहयोगी गठबंधन एनडीए को 350 से अधिक सीटें हासिल करने का गौरव प्राप्त हुआ है। इन चुनावों में मोदी आंधी के समक्ष राहुल गांधी सहित अनेकों विरोधी धड़ाम से गिर गए। इस बार मतदाताओं ने परिवारवाद और जातिवाद को त्यागकर राष्ट्रवाद को तरजीह दी है। अबकी बार नमो मंत्र का वार इतना गहरा हुआ कि राहुल गाँधी सहित नौ पूर्व मुख्यमंत्रियों को मजबूरन सियासी अखाड़े में हार का मुँह देखना पड़ा। शीला दीक्षित, भूपेंद्र हुड्डा, हरीश रावत, मुकुल संगमा, एचडी देवेगौड़ा, शिव सोरेन, बाबूलाल मरांडी, दिग्विजय सिंह, सुशील शिंदे कोई आम नाम नही, बल्कि भारतीय राजनीति के गिरामी नाम हैं।

इसी तरह जीतन मांझी, शत्रुघ्न सिन्हा, ज्योतिरादित्य सिंधिया, डिंपल यादव इत्यादि नाम भी राजनीति की पाठशाला में राजनेताओं को अक्सर सियासत का पाठ पढाते फिरते रहे हैं। परंतु लोकसभा चुनाव 2019 के घमासान में इन सभी नामदारों को जनता जनार्दन लोकतांत्रिक शक्ति का माकूल पाठ पढ़ा गई। इस चुनावी महासंग्राम में एक ओर जहां एक साधारण विचारधारा थी वहीं दूसरी ओर कांग्रेस एवं महागठबंधन की विशिष्ट सोच थी। लोकसभा चुनाव 2019 के दंगल में मोदी को परास्त करने के लिए देश के अनेकों दिग्गज नेताओं ने अपने राजनीतिक सिद्धांतों को त्याग कर निजी उसूलों को तरजीह दी। उन्होंने मोदी लहर को निष्क्रिय करने के लिए हर संभव प्रयास किए। बावजूद इसके विरोधी अपने मकसद में कामयाब नहीं हो सकें। कांग्रेस, माकपा, तृणमूल, तेदेपा, आआप, सपा, बसपा, द्रमुक, राजद, राकांपा सहित लगभग ढाई दर्जन दलों ने मोदी को सत्ता से हटाने के लिए अपने वर्षों के चिर प्रतिद्वंद्वियों को पलभर में गले लगा दिया। महागठबंधन का लक्ष्य मोदी को चुनावों में फेंकू नेता साबित करना था जबकि भाजपा का उद्देश्य गठबंधन के चापलूस राजनेताओं को राजनीति का माकूल पाठ पढ़ना था। कांग्रेस एवं महागठबंधन की चुनावी रैलियां मोदी के कटाक्ष पर आधारित थी जबकि भाजपा की चुनावी तैयारियाँ विरोधियों के डगमगाते उसूलों को पदार्फाश करना था। यह सियासी समर कई मायनों में महत्वपूर्ण था। यह चुनाव प्रधानमंत्री मोदी के लिए इसलिए भी अहम था क्योंकि विगत पांच वर्षों के दौरान जन कल्याण के लिए उनकी सरकार ने जो ऐतिहासिक फैसले लिए थे, उनका हिसाब आज उन्हें वोट हासिल करके चुकता करना था। उन्हें यह सुनिश्चित करना था कि पांच वर्षों के दौरान सरकार द्वारा जनहित में लिए गए निर्णय आज उनकी सरकार को किस करवट बैठाती है। नोटबंदी और जीएसटी का विपक्ष ने भले

ही उपहास उडाया हो, पर जनता ने इन फैसलों को मतदान के रोज बखूबी सराहा है। नोटबंदी से लेकर एयर स्ट्राईक तक मोदी ने कुछ ऐसे निर्णय लिए, जिनका मूर्त रूप देखने के लिए देश को 70 वर्षों से अधिक का समय झेलना पड़ा। विगत पांच वर्ष के दौरान भले ही विपक्ष मोदी के ऐतिहासिक निर्णयों का मिलजुल कर विरोध करता रहा हो, पर देश में संपन्न हुए सात चरणों के मतदान में जनमानस ने उन फैसलों की दिल खोलकर सराहना की। नोटबंदी, जीएसटी, सर्जिकल स्ट्राईक और एयर स्ट्राईक कोई आम निर्णय नहीं बल्कि ऐतिहासिक थे।

इन्हें व्यावहारिक रूप देने के लिए सरकार को 56 इंची सीने की आवश्यकता थी जो प्रधानमंत्री मोदी में बखूबी विद्यमान थी। वर्षों से हम यहाँ अवसरवादिता से प्रेरित राजनीति झेल रहे हैं। लेकिन वर्ष 2014 में पहली बार देश को मोदी से कुछ विशेष जनआकांक्षाएं जागृत हुईं। मोदी ने तात्कालिक सियासी समर में मतदाताओं में नव राजनीतिक उर्जा का संचार किया तथा साथ ही वह देशवासियों में राष्ट्र भाव जागरण में भी कामयाब हुए। वक्त के साथ साथ मुख्यमंत्री नरेंद्र मोदी दुनिया में प्रधानमंत्री मोदी के नाम से विख्यात होने लगे और प्रधानमंत्री पद की शक्तियों को भी समझने लगे। फिर 08 नवंबर 2016 का वह शुभ दिवस आया जब मोदी ने देश में नोटबंदी की घोषणा कर डाली। यह नमो आर्थिक मॉडल का पहला नमूना था जो देश में आधी रात से लागू हुआ था। हालाँकि विपक्ष सरकार के इस ऐतिहासिक फैसले की शुरू से ही भर्त्सना करता रहा। पर समय के साथ जनमानस निर्णय की व्यावहारिकता को समझने लगे। इसी तरह सरकार अपने कार्यकाल के दौरान अनेकों कल्याणकारी निर्णय लेती रही और विपक्ष आलोचना करता रहा। हद तो तब हुई जब देश के अनेकों राजनीतिक दल मोदी की देश भक्ति से इतने सहम गए कि उन्होंने पुलवामा आत्मघाती हमले के प्रतिशोध स्वरूप सरकार द्वारा अपनाई गई कार्रवाई की आलोचना कर डाली तथा सर्जिकल स्ट्राइक से संबंधित सबूत मांगने लगे। तब एक ओर देश 44 शहीद जवानों की शहादत से सदमे में था तथा दूसरी ओर भारत के स्वयं भू राजनेता सरकार के इस साहसिक निर्णय की आलोचना कर रहे थे। देश का आमजन तब भारत की औछी राजनीति को भली भाँति निहारता रहा। फिर चुनावी घमासान 2019 का वक्त आया और देशवासियों ने भारत को खंडित करने की चेष्टा करने वालों को अपने मतदान से चोट करके सियासी मैदान से सहजता से बाहर फेंक दिया। देश में संपन्न हुए सभी सात चरणों में आम मतदाता ने देश के सभी अवसरवादी राष्ट्रीय व क्षेत्रीय दलों को ऐसी धूल चटाई जिसे धोने में उन्हें वर्षों मशक्कत करनी पडेगी। आज मोदी फैसलों का उपहास उड़ाने वालों का स्वयं मजाक बन गया। उनका महागठबंधन मोदी लहर में पूरी तरह से तहस-नहस हो गया। दो माह की चुनावी बयार ने कांग्रेस सहित सभी भाजपा विरोधियों को उनकी औकात दिखा दी। अबकी बार राष्ट्रवाद रूपी आंधी परिवारवाद रूपी गांधी पर कुछ ज्यादा ही मार कर गई। क्योंकि आज लोग समझ गए हैं कि उन्हें देश के लिए आतंक परस्तों को नेस्तनाबूत करने वाली राजनीतिक सोच की आवश्यकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जब तक विपक्ष देश में हर मुद्दे को राजनीतिक दृष्टि से देखता रहेगा तब तक भाजपा यूँ ही सहजता से अपने बूते 272 का जादुई आँकड़ा छूती रहेगी। ठीक है लोकतंत्र में विपक्ष का कार्य सत्ता पक्ष के कार्यों की आलोचना करना है। परंतु जब विपक्ष देश के सुरक्षा संबंधी निर्णय को भी राजनीतिक दृष्टि से देखने लगे तो वह विपक्ष देश के लिए घातक सिद्ध हो सकता है। अतः उम्मीद है कि मोदी के विरोधी आगामी दिनों में देश में एक स्वच्छ राजनीतिक विचारधारा का परिचय देंगे। भविष्य में हमें यहाँ एक ऐसी सियासत देखने को मिले जहाँ हमारे सभी राजनीतिक दल देश हित के लिए तन-मन-धन से विचारें तथा ऐसे दूरगामी निर्णय लें जिससे देशवासियों को सुखद एहसास की अनुभूति हो। ◆◆◆

भाजपा की रिकॉर्ड़ तोड़ सफलता

शिवाजी ने समाज का आत्मविश्वास जगाया तो अदने से मराठा मुगलों के काल बन गए, गुरु गोविंद सिंह ने निर्बल कहे जाने वाले समाज को इस कदर आत्मविश्वासी बना दिया कि एक-एक सिख सवा-सवा लाख से लडने़ की हिमाकत करने लगा। भारतीय समाज और राजनीतिक नेतृत्व आज विश्वास और आत्मविश्वास से सराबोर है

... -राकेश सैन

2019 के आम चुनावों में रिकार्ड तोड़ सफलता से सत्ता में वापसी के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली स्थित भारतीय जनता पार्टी मुख्यालय में कहा कि 130 करोड़ हिंदुस्तानियों ने फकीर की झोली भर दी। उन्होंने संकल्प जताया कि वह बद इरादे और बदनीयत से कोई काम नहीं करेंगे और अपने लिए कभी भी कुछ नहीं करेंगे। चुनाव के समय देश में 'नमो-नमो' थी और जीत की विनम्रता ने माहौल को 'नम: नम:' बना दिया। यह देश स्वभावत: ऐसा ही है, जिसके चोले में जेब न हो यहां की जनता उसकी झोली भर ही देती है। बिना जेब वाली धोती धारण करने वाले गांधी को इस देश ने महात्मा बना दिया तो नेताजी सुभाष बाबू के लिए महिलाओं ने अपने गहने तक उतार कर दे दिए। विदुर नीति में ठीक ही कहा है कि विश्वास और जन आशीर्वाद के सामने धन बल, सत्ता बल, षडयंत्र, छल-प्रपंच बौने पड़ जाते हैं।

आम चुनावों में मोदी की जीत व विपक्ष की पराजय की मीमांसा हो रही है तो राष्ट्रवाद, हिंदुत्व, ध्रुवीकरण, सरकारी योजनाओं, विपक्ष की नकारात्मक राजनीति, विकल्प की कमी सहित अनेक मुद्दे विमर्श में हैं, लेकिन लगता है कि शायद बुद्धिजीवियों को कुछ समय के लिए अपनी खोपड़ी को आराम देना चाहिए। ये जीत इन मुद्दों के बावजूद इनसे इतर है, यह जीत है जनता के विश्वास की, वह जनता जिसने विश्वास किया उस फकीर पर जिसकी चोले को जेब नहीं लगी है। जिसकी माँ आज भी दस-बीस रूपये की हवाई चप्पल डालती है और परिवार के लोग छोटा-मोटा व्यवसाय कर जीवन यापन करते हैं। यह फकीर अपने लिए कुछ नहीं करता, उससे गलती हो सकती है, गति न्यूनाधिक होने की पूरी संभावना है परंतु नीयत साफ और इरादे नेक हैं। आखिर क्यों न विश्वास हो इस फकीर पर।

विपक्ष की ही दृष्टि से देखें तो चुनाव में मोदी के सामने अनेक चुनौतियां भी थीं। आरोप था कि बेरोजगारी रिकॉर्ड स्तर तक बढ़ी, किसानों की आय नहीं बढ़ी और औद्योगिक उत्पादन में गिरावट आई। विपक्ष की मानें तो भारतीयों को नोटबंदी से काफी नुकसान उठाना पड़ा। जीएसटी को लेकर भी कई शिकायतें थीं, लेकिन विश्वास के चलते लोगों इन सबके लिए मोदी को जिम्मेदार नहीं माना। मोदी अपने भाषणों में लगातार कहते आए कि उन्हें 60 साल की अव्यवस्था को सुधारने के लिए पांच साल से अधिक समय चाहिए। लोगों ने उनकी बात पर विश्वास कर लिया और लबालब भर दी फकीर की झोली। लगातार दूसरी बार शानदार जीत हासिल करने वाले मोदी की तुलना 1980 के दशक लोकप्रिय अमरीकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन से की जा सकती है, जिन्हें उस समय की आर्थिक मुश्किलों के लिए जनता ने जिम्मेदार नहीं माना। चुनाव में एक ओर झोली वाला फकीर था तो दूसरी ओर सूटकेस संस्कृति के प्रतीक, जो बार-बार कह रहे थे कि चौकीदार चोर है। मोदी के प्रति जनता के विश्वास का ही परिणाम दिखता है कि इस गाली गलौच से जनता ने खुद को अपमानित होता महसूस किया। खाऊंगा न खाने दूंगा के मोदी वचन पर जनता को इतना विश्वास था कि हजार बार झूठ दोहरा कर उसे सच बनाने वाली हिटलर के मंत्री गॉबल्स की थ्योरी ही धराशाई हो गई। पुलवामा आतंकी हमले के बाद मोदी ने पाकिस्तान को साफ जता दिया कि उसकी सेना बहुत बड़ी गलती कर चुकी है। शुरू में इसे पाकिस्तान को लेकर अपनाम्र जाने वाली नीति की रस्म माना परंतु बालाकोट पर हुई एयर स्ट्राईक ने उनके प्रति जनता का विश्वास का स्तर इतना ऊंचा कर दिया कि देश की सबसे पुरानी व सबसे अधिक शासन करने वाली कांग्रेस अपने साथियों के साथ उसमें आकण्ठ डूब गई। गरीबों के लिए बिजली, मकान, शौचालय, क्रेडिट कार्ड और रसोई गैस की व्यवस्था ने विश्वास की इस इमारत की नींव पहले ही तैयार करके रखी थी। मोदी आम लोगों को विश्वास दिलवाने में कामयाब रहे कि अगर वे सत्ता में लौटते हैं

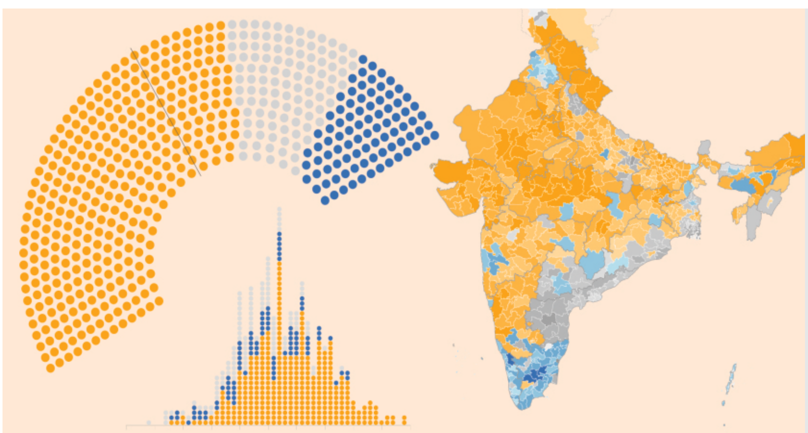

तो देश सुरक्षित हाथों में रहेगा। अकसर आम लोगों की विदेश नीति में दिलचस्पी नहीं होती है, लेकिन चुनावी रिपोर्टिंग के दौरान विदेशी मीडिया ने भी माना कि अधिकतर मतदाताओं का विचार है कि मोदी के नेतृत्व में भारत का सम्मान विदेशों में बढ़ा है। मजबूत नेता की चाहत केवल भारत में पिछले कुछ दशकों से देखने को मिल रही थी, लोग मानने लगे हैं कि कद्दावर नेता के बिना देश न तो सम्मानपूर्वक जी सकता है और न ही विकास कर सकता। शिक्षित वर्ग के सामने रूस के राष्ट्रपति ब्लादिमिर पुतिन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, जापानी राष्ट्राध्यक्ष शिंजो आबे, तुर्की के राष्ट्रपति रेचैप तै"यप आर्दोऑन, हंगरी के विक्टर ओर्बान, ब्राजील के जैर बोलसोनारो आदि उदाहरण बन कर आए जिनके मजबूत नेतृत्व ने अपने देशों को विकास के शिखर तक पहुंचाया। भारतीयों को मोदी के नेतृत्व में विश्वास हो गया कि डोकलाम में चीन जैसे अडियल पड़ौसी को झुकाने वाले मोदी उनकी यह कमी पूरी कर सकते हैं। इसी विश्वास के चलते अबकी बार लगभग हर भारतीय स्थानीय प्रतिनिधि की अनदेखी कर मोदी के नाम पर मतदान करता नजर आया।

जनता के विश्वास की शक्ति इसमें छिपी आकांक्षाओं को खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी पहचाना है। तभी तो विजयी भाषण में उन्होंने कहा कि अपेक्षाएं निजी हित के लिए हों तो तनाव पैदा करती हैं परंतु किसी के प्रति जनाकांक्षाएं व जनविश्वास उस व्यक्ति को ऊर्जा प्रदान करता है। यही ऊर्जा है जो किसी नेता या सरकार को काम करने को मजबूर करता है। 2014 में नरेंद्र मोदी ने जनता से पांच साल नहीं बल्कि कम से कम दस साल मांगे थे ताकि वो अपनी योजनाओं को वास्तविक रूप में मूर्त रूप प्रदान कर सकें। उन्होंने गांधी जी की 150 वीं जयंती दो अक्तूबर, 2019 को स्वच्छ भारत अभियान, 2022 को किसानों की आय दोगुना करने जैसी अनेक योजनाएं आरंभ कीं और फोकस दस सालों पर केंद्रित रखा। विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान जब एक युवक ने प्रधानमंत्री बनने की इच्छा जताई तो मोदी ने सहज स्वभाव में कहा कि 2024 तक कोई वैकेंसी नहीं है। लोकसभा में कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने मोदी को गले लगाने के लिए उनसे अपनी सीट से उठने को कहा तो अपने मोदी ने जवाब दिया कि यहां पर बैठाने या उठाने का काम जनता जनार्दन करती है, कोई व्यक्ति नहीं। असल में इसी तरह के आत्मविश्वासी नेता ही जनता में विश्वास पैदा करते हैं और यही विश्वास समाज में भी आत्मविश्वास का संचार करता है। शिवाजी ने समाज का आत्मविश्वास जगाया तो अदने से मराठा मुगलों के काल बन गए, गुरु गोविंद सिंह जी ने निर्बल कहे जाने वाले समाज को इस कदर आत्मविश्वासी बना दिया कि एक-एक सिख सवा-सवा लाख से लडने् की हिमाकत करने लगा। भारतीय समाज और राजनीतिक नेतृत्व आज विश्वास और आत्मविश्वास से सराबोर है विकसित व शक्तिशाली भारत की उम्मीद बंधना स्वाभाविक है।◆◆◆

मतदान सबसे उम्रदराज के क्षेत्र में मतदान का जज्बा

लोकतंत्र के महापर्व में सबसे उम्र दराज पांगी के 121 वर्षीय वीर चंद ने भी मतदान किया। कांगड़ा के भटहेड़ की 117 वर्षीय मांजो देवी और चंबा के 114 साल के प्यार सिंह ने भी वोट डालकर अपना दायित्व निभाया। रविवार को मतदान के दौरान बुजुर्ग मतदाताओं ने खूब जोश दिखाया। प्रदेश भर में 999 शतकवीर मतदाताओं में से सैकड़ों ने नई सरकार चुनने में अपना खूब योगदान दिया। किसी बुजुर्ग को मतदान केंद्र तक परिजन पालकी में लाए तो किसी को गोद में लाया गया। बुजुर्ग मतदाताओं का जोश और उत्साह देखते ही बना। जिला चंबा के पांगी घाटी के वीर चंद ने अपनी 95 वर्षीय केसरी देवी के साथ जाकर मतदान किया। चंबा के हटनाला निवासी 114 वर्षीय प्यार सिंह, सुरंगानी के गांव बलोडी निवासी 106 वर्षीय नुर्धरा, कियाणी बूथ में 103 वर्षीय प्रेमो देवी, अपर सुल्तानपुर बूथ में 105 वर्षीय शमशेर कपूर, बदाह बूथ पर 102 वर्षीय साल की टुलकी देवी, बंजार के 101 वर्षीय जीतराम, 105 वर्षीय के इंद्र राम, 101 वर्षीय की रूपनी देवी ने मतदान किया। धलैऊ ठियोग के 106 वर्षीय माठकुराम ने 6 किमी. पैदल चलकर अपना वोट डालां

रोहड़ू के सौ वर्षीय हरिसरन लडेटा, कर्मदास, जाखी के 115 वर्षीय रणदेई ने अपना मत दिया। बराल पोलिंग बूथ पर 101 वर्षीय संतराम काल्टा, कुपड़ी में 105 वर्षीय लगणु राम ने अपना वोट डाला। ऊना जिले में 107 वर्षीय ईसपुर निवासी कश्मीर सिंह, 104 वर्षीय धुसाड़ा निवासी धनीराम, 105 वर्षीय करमो देवी, 106 वर्षीय बिशनी देवी ने वोट डाला। पांवटा के 104 वर्षीय धूडूराम, 100 वर्षीय प्राको देवी, लहारब निवासी, 108 वर्षीय मुन्नाराम, हमीरपुर के डिडवीं बूथ पर मतदान करने के बाद 106 वर्षीय चरजू देवी ने मतदान किया। हमीरपुर के ककड़ियाणा में 107 वर्षीय बसंती देवी ने वोट डाला, पंचायत मूलकोटी के 110 वर्षीय कांशी राम ने मशोबरा में वोट दिया। कुल्लू के शाक्टी मतदान केन्द्र पर 110 वर्षीय शाढ़ी देवी का जिला प्रशासन के अधिकारी द्वारा भव्य स्वागत किया गया। ये मतदान के लिए एक बड़ी मिसाल है।◆◆◆

उद्योगों के विकास हेतु लघु उद्योग भारती एकजुट

पूरे प्रदेश में सूक्ष्म, मध्यम एवं लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए एकमात्र अखिल भारतीय संगठन लघु उद्योग भारती ने दो दिवसीय मंथन कर कई निर्णय लिए। वैश्वीकरण व प्रतिस्पर्धा के दौर में देश की आर्थिकता को सुदृढ़, विकास को गतिशील बनाने, कुटीर, सुक्ष्म, लघु व मध्यम उद्योगों की प्रगति व बेहतरी के लिए प्रयासरत देश का सबसे बड़ा उद्यमी संगठन लघु उद्योग भारती की स्थापना को समर्पित उद्यमिता स मेलन का आयोजन इस्पात नगरी भिलाई छत्तीसगढ़ में किया गया।

इस सबन्ध में बददी में पत्रकारों को जानकारी देते हुए हिमाचल इकाई के अध्यक्ष राजीव कंसल व फार्मा विंग के राष्ट्रीय चेयरमैन डा. राजेश गुप्ता ने बताया कि इस सम्मेलन में देश के 22 प्रदेशो के प्रतिनिधियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई। राष्ट्रीय संगठन मंत्री प्रकाश चंद ने कहा कि भारत मे हरेक गांव, कस्बे, छोटे नगर व शहर उद्यम से जुड़े हुए थे तथा निर्यात करने में भी अपना देश अव्वल था। उन्होंने संगठन की आवश्यकता व गरिमा की भी चर्चा की। उपाध्यक्ष रमाकांत भारद्वाज ने श्रम नियमों, सचिव सुनील सिसीकर ने वित्त व बैंकिंग, सचिव दिनेश लकड़ा ने कर्मचारी बीमा, विजय तलवाड ने विद्युत नियमों, फार्मा के नेशनल हैड डा. राजेश गुप्ता ने फार्मा, औषध प्रशासन, विपिन सिंघल ने चाय बागान, गोविंद लेले ने भविष्य निधि, अंजू बजाज ने महिला उद्यमियों के लिए विभिन्न योजनाओं व अवसरों तथा पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ओमप्रकाश मित्तल ने विर्मा भवन दिल्ली के बारे में विस्तृत चर्चा की।

राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र गुप्ता ने कहा कि लघु उद्योग भारती कुटीर, सुक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यमियों के हितार्थ कई योजनाओं को केंद्र, प्रदेश सरकारों के माध्यम से शुरू करवाने, उद्यमियों की विभिन्न समस्याओं के समाधान, आगामी समय मे उद्यमियों के सर्वपक्षीय विकास के लिए सहायक योजनाओं को नीति रूप लागू करवाने के लिए कटिबद्ध है, जिसमें एक ही स्थान पर व एक ही मंत्रालय द्वारा उद्यमियों की समस्याओं का नीतिगत समाधान किया जा सके।

सम्मेलन में हिमाचल की ओर से राज्य प्रधान राजीव कुमार कंसल, सीनियर वाईस प्रेजीडेंट नेत्र प्रकाश कौशिक, नेशनल फार्मा हेड डा. राजेश गुप्ता, प्रदेश कोषाध्यक्ष विकास सेठ ने भाग लिया। इस दौरान नागपुर में प्रस्तावित राष्ट्रीय सम्मेलन उसके प्रारूप व आयोजन समितियों के गठन की भी घोषणा की गई।◆◆◆

सरस्वती विद्या मन्दिर स्कूल ने लगाया रक्तदान शिविर

सरस्वती विद्या मन्दिर स्कूल बद्दी तथा डॉ. हेडगेवार स्मारक समिति नालागढ द्वारा संयुक्त रूप से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 49 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया इस बार स्कूल प्रांगण में शिविर का आयोजन होने से हमें यह मौका मिला। अब हम खूनदान करके बहुत अच्छा महसूस कर रहे हैं। पता नहीं किस जरूरतमन्द के शरीर में हमारा खून चढेगा। और उसके जीवन में नया सवेरा जगेगा। हमें बहुत गर्व महसूस हो रहा है और हम आगे भी निरन्तर इस प्रक्रिया को जारी रखेंगे।

स्कूल प्रधानाचार्य गणेशदत शर्मा ने बारहवीं बार रक्तदान किया। वहीं समाज सेवी किशोर ठाकुर ने जीवन में उन्नीसवीं बार रक्तदान किया। शिविर में डॉ. विक्रम बिन्दल, पार्षद संदीप सचदेवा आदि अनेक गणमान्य लोग मौजूद थे।◆◆◆

शुभकामनाओं सहित

मातृवन्दना के सभी पाठकों को रजत जयंती वर्ष पूर्ण होने पर हार्दिक बधाईयां

प्रदेश के सभी खंड में डीलरों की आवश्यकता है। कृपया संपर्क करें:
70182-17700
महेंद्र कपूर

महात्मा गांधी की 150वीं जयंती मनाएगा नेरी

ठाकुर जगदेव चन्द स्मृति शोध संस्थान नेरी में दिनांक 19.5. 2019 को सायं 3.30 बजे संस्थान परिसर में वार्षिक आम साधारण सभा आयोजित की गई। शोध संस्थान के अध्यक्ष डॉ. विजय मोहन कुमार पुरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। सभा में विशेष आमन्त्रित डा. वेद प्रकाश अग्नि, बनवीर राणा व संजय कुमार विशेष रूप से उपस्थित रहे। सभा की कार्यवाही का संचालन भूमिदत्त शर्मा महासचिव शोध संस्थान नेरी ने किया। सभा का शुभारम्भ इतिहास पुरुष के वाचन से हुआ।

संस्थान के महासचिव ने गत वर्ष की साधारण सभा की कार्यवाही सभी सदस्यों के समक्ष रखी। साधारण सभा में निर्णय लिया गया कि आगामी वर्ष भर में आयोजित की जाने वाली वैचारिक पक्ष की गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। 'पश्चिमी हिमालय में ऋषि परम्परा' पर राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन करेंगे। जिसमें जिला अनुसार जिला इतिहास लेखन योजना के अन्तर्गत किन्नौर चम्बा, शिमला तथा कुल्लू के धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में एक दिवसीय गोष्ठियां करने की योजना तय की गई। हि.प्र.शिमला विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग और नेरी शोध संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में जलियांवाला बाग हत्याकांड के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य व महत्मा गांधी जी के 150वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय संगोष्ठियां करने की योजना बनाई गई है। पद्मश्री श्री डॉ.विष्णु श्रीधर वाकणकर का यह शताब्दी वर्श चल रहा है। पद्मश्री डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर एक महान चित्रकार, पुरातत्त्वविद्, इतिहासकार और मुद्रा शास्त्र के ज्ञाता थे। अखिल भारतीय संस्कार भारती शताब्दी वर्ष भर पर अनेक स्थानों पर शताब्दी कार्यक्रम आयोजित करने वाली है।

भीमबेटका की गुफाओं, चित्रलिपि को उन्होंने विश्व समुदाय के समक्ष लाया था। नेरी शोध संस्थान से सम्बन्ध बाबा साहब आपटे स्मारक समिति दिल्ली प्रतिवर्ष उनकी स्मृति में इतिहास और पुरातत्व के विद्वान्, संस्कृत विद्वानों को 51,000 रुपये का पुरस्कार व प्रशस्ति पत्र प्रदान करती है। इसका शुभारम्भ शोध संस्थान के संस्थापक स्व. ठाकुर रामसिंह द्वारा किया गया था। शोध संस्थान के निदेशक मण्डल में निम्नलिखित निदेशकों की नियुक्तियां की गई। डॉ. भाग चन्द चौहान, प्यार चन्द परमार व विजय शर्मा को मनोनीत किया गया तथा संयुक्त सचिव डॉ.विकास शर्मा और श्री प्रदीप ठाकुर को सह-कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया। सुरेन्द्र नाथ शर्मा को आर्थिक पक्ष का प्रमुख मनोनीत किया गया। साधारण सभा में के बनवीर राणा, संजय कुमार, शोध संस्थान के निदेशक प्रेम सिंह भरमौरिया, समन्वयक एवं निदशक चेतराम गर्ग, विनोद शर्मा, बलदेव चन्द, अंजू ठाकुर, दिशा फाउंडेशन की अध्यक्ष, रिजा ठाकुर, डी.पी.एस.स्कूल अवाहदेवी की अध्यक्ष, डॉ. राजकुमार ठाकुर, जगवीर चन्देल, प्रवीण भट्टी, इतिहास दिवाकर के संपादक डॉ. राकेश कुमार शर्मा आदि सभी सदस्य उपस्थित रहे। ◆◆◆

भारतीय किसान संघ

दिनांक 28.05.2019 को भारतीय किसान संघ खंड छुहारा की मासिक बैठक जिला अध्यक्ष केदार सिंह ठाकुर की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें मुख्य रूप से भारतीय किसान संघ के संगठन मंत्री हरिराम व भारतीय किसान संघ हिमाचल प्रदेश के महामंत्री सुरेश ठाकुर उपस्थित रहे। इस बैठक में विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई।

1. जिन छोटे किसानों के पिछले साल हिमाचल सरकार द्वारा सेब के पेड़ काटे गए बैठक में निर्णय लिया गया सरकार छोटे व सीमांत कब्जा धारियों को पांच पांच बीघा भूमि देने की पॉलिसी को तुरंत लागू करें।
2. हिमाचल सरकार तबादला नीति 1980 के एक्ट में संशोधान कर किसानों के तबादले तुरंत लागू करें।
3. हिमाचल प्रदेश में जो किसान प्राकृतिक खेती कर रहे हैं उन किसानों को सरकार उचित मूल्य मिलने बारे मार्केटिंग का प्रावधान करें। दुर्घटना में कोई भी फंस सकता है। इसलिए सुरक्षा उपायों की जानकारी सबको अवश्य होनी चाहिए।

◆◆◆

उत्तराखण्ड की पहली महिला ट्रेन चालक

कौन

ट्रेन चालक मूल रूप से रिखणीखाल (पौड़ी गढ़वाल) के बामसू गांव की रहने वाली अंजलि शाह अपने बचपन का सपना साकार कर उत्तराखंड की पहली महिला ट्रेन चालक बन गई हैं। असिस्टेंट लोको पायलट अंजलि फिलहाल ट्रेनिंग पर हैं। वो अभी ट्रेन के मुख्य चालक की मदद से ट्रेन चला रही हैं। 23 वर्षीय अंजलि शाह ट्रेनिंग के दौरान दो ट्रेन ट्रिप पूरी कर चुकी हैं। बिटिया आपने रिखणीखाल का नाम रोशन किया धन्य है वो मां बाप जहा ऐसी बेटी जन्म लेती है। ◆◆◆

योग भारती द्वारा योग शिविर

नगरपालिका के टाऊन हाल में योग भारती सोलन द्वारा 26 मई से आठ दिवसीय योग शिविर लगाया गया। शिविर का समय प्रात: 05-30 से 07-30 तक और दोपहर बाद 04 से 06 बजे तक था। यह शिविर 26 मई से 02 जून तक चला। योग अभ्यास वर्ग के जरिए आमजन को स्वस्थ जीवन जीने के सरल उपाय बताये गए। शिविर में न्यूरो थैरेपी और आयुर्वेदिक चिकित्सक उपलब्ध रहे। भारत के विख्यात योगी श्रीनिवास मूर्ति के योग्य मार्ग दर्शन में इस शिविर का आयोजन किया। इसमें 15 से

50 वर्ष की आयु वर्ग के 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया, इसमें भाग लेने के लिए सभी को 200 रूपये शुल्क अदा किया। ◆◆◆

अदभुत अविश्वसनीय अकल्पनीय प्रदीप सारंगी

उड़ीसा से सांसद बने प्रदीप सारंगी मंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं। यह चित्र मौन रहकर भी नए भारत की आशाओं और आकांक्षाओं की अनेकों कहानी कह रहा है। जहां विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र में मंत्री जैसा बड़ा औहदा हासिल करने के लिए अब न ही राजनैतिक रसूख की आवश्यकता है, न किसी नेता या बड़े कारोबारी का पुत्र होने की। प्रदीप सारंगी एक निर्धन परिवार से सम्बंध रखते हैं। साईकिल चलाकर गांव-गांव घूमकर प्रचार करते रहे जिससे इनकी सादगी से दुनिया कायल हुई। यह अपने आप में अदभुत, अकल्पनीय व अविश्वसनीय है। ◆◆◆

युवा सांसद बने राज्य मंत्री

30 मई 2019 का दिन हिमाचल प्रदेश के लिए कुछ खास रहा। केन्द्र सरकार के मंत्रियों की सूची में हिमाचल प्रदेश से भी युवा व चौथी बार के सासंद अनुराग सिंह ठाकुर को शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रित किया। इस प्रकार केन्द्रीय मंत्रिमंडल में स्थान देकर अमित शाह ने हमीरपुर में मतदाताओं से चुनावी रैली में किए गए अपने वायदे को सशब्द पूरा किया है। ◆◆◆

हिमाचल में डेरी फार्मिंग की अपार संभावनाएं

... प्रताप सिंह पटयाल

हिमाचल प्रदेश में भले ही बागवानी तथा पर्यटन को आर्थिकी का मुख्य स्त्रोत माना जाता है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों की आर्थिकी को मजबूत करने में दुग्ध उत्पादन की महत्वपूर्ण भागीदारी है। बढ़ती जनसंख्या के मद्दनजर दूध की मांग प्रतिदिन बढ़ रही है। दूध हर घर परिवार की जरूरत ही नहीं है, बल्कि दुग्ध पदार्थ दिनचर्या का हिस्सा बन चुके हैं। प्राचीन काल से कृषि के साथ पशुपालन किसानों का पुश्तैनी व परंपरागत व्यवस्था रहा है। आज भी प्रदेश में 70 फीसदी कृषक पशुपालन व्यवस्था से जुड़े हैं। वर्तमान में हिमाचल के पशुपालक साहिवाल, गीर, रेडसिंघी तथा गंगागिरी जैसे देशी गौवंश के साथ हॉलीस्टीन, जर्सी फ्रीजियन तथा ब्राउन स्वीस जैसी विदेशी प्रजाति की गउएं भी पाल रहे हैं। राज्य के निचले जिलों में गोपालन के साथ मुर्राह, नीलीरावी, सुर्ती तथा भदावरी जैसी उत्कृष्ट नस्ल की भारी कीमतों की भैसों के पालने का क्रम भी जारी है। जबकि पहाड़ की भौगोलिक संरचना व विकट परिस्थितियां देश के बाकी राज्यों से कहीं अलग हैं, लेकिन पशुपालन व्यवसाय में फिर भी कृषकों का उत्साह है।

ज्ञात रहे देश में भैसों की 23 प्रजातियों में से 12 नस्लों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा नस्ल पंजीकरण समिति ने मान्यता दी है। जिस प्रकार साहीवाल नस्ल की गाय का दूध श्रेष्ठ गुणवत्तायुक्त माना गया है, उसी प्रकार भदावरी प्रजाति की भैंस को दूध व घी के लिए उम्दा नस्ल माना गया है। 15 से 20 लीटर दूध देने वाली मुर्राह की अपेक्षा इसमें दूध देने की क्षमता थोड़ी कम हो सकती है, लेकिन इसके दूध में एसएनएफ सोलिड नेट फैट अधिक मात्रा में है तथा घी उत्तम श्रेणी में आंका गया है। भारत 1998 से विश्व में सर्वाधिक दुग्ध उत्पादन की 18.5 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ शीर्ष पर काबिज है, लेकिन प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धता में न्यूजीलैंड 9773 ग्राम के साथ शीर्ष पर है। भारत में यह औसत 375 ग्राम प्रति व्यक्ति तथा अपने राज्य में यह औसत 542 ग्राम प्रति व्यक्ति है। विश्व में पशुपालन में भी भारत शीर्ष पर है। दुनिया के पशुधन का पांचवां हिस्सा भारत में मौजूद है, लेकिन चरागाहों के मामले में देश वैश्विक स्तर पर पिछड़ गया है। कुछ समय देश में पशुओं की चरागाहों में सियासी रूतबे के अतिक्रमण तथा विकास की मिनारों ने चरना शुरू कर दिया, जिस कारण लाखों की संख्या में गोधन सड़कों की धूल फांक कर सियासी साए की उम्मीद में आशियाना तलाश रहा है। चरागाहों के प्रबंधन में शून्य मात्र प्रयासों से सिमटते चरांद व घास में खरपतवार की बढ़ोत्तरी तथा ग्लोबल वार्मिंग के प्रकोप जैसी परिस्थितियों के कारण पशुचारा समस्या से जूझ रहे कृषकों के लिए यह जिक्र करना प्रासंगिक है कि केरल व गोवा जैसे सीमित चरागाह भूमि वाले राज्यों में कई कृषक हरा पशुचारा उत्पादन के लिए 'हाइड्रोपोनिक्स' तकनीक का सहारा ले रहे हैं। इस तकनीक से तैयार किए गए चारे में 'क्रूड प्रोटीन' की मात्रा 13।5 प्रतिशत तक आंकी गई है, जो सामान्य चारे से अधिक है। इस तकनीक से चरी, बाजरा व जई आदि गुणवत्तायुक्त हरा चारा जल्दी तैयार होता है तथा खर्च व पानी की लागत भी कम है। छोटे स्तर के पशुपालकों के लिए यह तकनीक अधिक कारगर है, इससे पूरा वर्ष चारा उपलब्ध रहता है। भीड़ग्रस्त शहरी क्षेत्रों में लोग इस तकनीक से सब्जी उत्पादन भी कर रहे हैं। बहरहाल मिलावट खोरी के इस दौर में स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभावों के कारण का रूझान सीधा दुधारू पशुओं से प्राप्त दूध की तरफ बढ़ने से डेयरी फार्मिंग व्यवस्था आज समय की मांग बन चुका है। प्रोडक्टों की मांग बाजारों में जोरों पर है में दुग्ध उत्पादों के लिए बाजार पूरा वर्ष सहायक रहते हैं, लेकिन पहाड़ के दूर-दराज के मूलभूत सुविधाओं का ढांचा पूरी तरह विकसित न होने से पशुपालकों को उत्पादों के लिए उचित विक्रय बाजार तथा के वाजिब दाम नहीं मिलते।

एक ओर दुधारू पशुओं की भारी-भारी कीमतें, दूसरी ओर इनके लिए दुकानदार उपलब्ध चारे की कीमतें आसमान छू रहे हैं, जिस कारण कृषि संबंधी अर्थव्यवस्था परिभाषित करने वाले पशुपालन व्यवसाय भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इससे सरकारों और पशुपालकों को पेश आई चुनौतियों से निपटने के विकल्पों पर गंभीर से विचार करना होगा, ताकि पशु व्यवसाय व्यवहारिक बनें, जो कि दम रही कृषि के बाद किसानों को वित्तीय से उभार कर उनका आर्थिक पक्ष मजबूत हो सकता है। यह व्यवसाय ग्रामीण क्षेत्रों से है। यदि पशुपालकों को दुग्ध उत्पादन लागत के अनुरूप उचित दाम मिले, तो गांव समद्ध होंगे। गांवो की समृद्धि का संबंध सीधा देश की प्रगति से जुड़ा है। ◆◆◆

एक बार फिर स्थिर सरकार

... -राजेश वर्मा

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश में पिछले 30 वर्षों के बाद यह दूसरा मौका होगा जब केन्द्र में पूर्ण बहुमत की स्थिर सरकार बनने का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जाएगा। भाजपा द्वारा 300 से अधिक सीटें जीतने और बहुत जगह उनकी जीत का अंतर 4 लाख से उपर रहने का मतलब है किसी भी प्रत्याशी को उसकी योग्यता के अतिरिक्त सिर्फ मोदी के नाम पर वोट मिलना है। कोई भी देश तब तक स्थिर नहीं हो सकता जब तक वहां का नेतृत्व स्थिर न हो, देश के विकास के लिए स्थिर सरकार का होना बेहद जरूरी है। इसी स्थिरता को देश के अवाम ने भी मतदान के द्वारा कायम रखा।

विपक्ष की ओर से चुनाव से पहले उन पर तरह-तरह के आरोप प्रत्यारोप लगाए गए लेकिन मतदाताओं ने एक बार फिर उन तमाम आरोप प्रत्यारोपों को दरकिनार करते हुए उनके हाथ में देश की बागडोर थमा दी। देश में 17वीं लोकसभा के गठन के लिए 90 करोड़ मतदाताओं में से मतदान हुआ। 7 चरणों में चले इस चुनावी महाकुंभ में 15 करोड़ युवा मतदाताओं में से पहली बार मतदान किया इनकी आयु 18 से 19 वर्ष के बीच थी । इससे एक बात तो साफ है कि देश के प्रति देश का युवा गंभीर होकर सोचने लगा है। मुख्य चुनाव आयुक्त के मुताबिक पिछले लोकसभा चुनाव के मुकाबले इस बार 8.43 करोड़ नए मतदाता बढ़े। इस बार 10 लाख के करीब मतदान केन्द्र बनाए गए व सभी मतदान केंद्रों पर इस बार वीवीपैट का इस्तेमाल हुआ। आज पूरा विश्व हमारी ओर टकटकी लगाए देख रहा है इन चुनाव परिणामों से संपूर्ण विश्व के तमाम देशों को भारत का एक मजबूत लोकतांत्रिक देश होने का संदेश गया है तथा वैश्विक शांति व स्थिरता के लिए यह चुनाव परिणाम काफी मायने रखते हैं। वैसे भी आने वाले समय में जिस विश्वगुरु की कल्पना हम अपने देश से कर रहे हैं यह चुनाव परिणाम उसी विश्वगुरु बनने की राह पर हैं।

चुनावी परिणामों ने एक बात तो साफ कर दी है कि नरेन्द्र मोदी को एक बार फिर देश प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहता है। देश ही क्या विश्वभर में बसे तमाम भारतीय भी उन्हें देश के मुखिया के रूप में देखना चाहते हैं। भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है और निष्पक्ष व स्वतंत्र चुनाव करवाने के लिए इसकी विश्व में पहचान है और आज वह पहचान और मजबूत हुई। बात करें देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस की तो कांग्रेस एक के बाद एक हो रही गलतियों से कुछ भी नहीं सीख पायी। मात्र परिवार वाद तक सिमट कर रह गई है। इसका उदाहरण तब देखने को मिलता है जब इस पार्टी के किसी भी निर्वाचित सदस्य से पार्टी के बारे में कुछ भी पूछा जाता है तो उनका एक ही उत्तर होता है कि अध्यक्षा सोनिया गांधी जो भी फैसला लेंगी वह ही सभी को मान्य होगा या जो भी राहुल गांधी कहेंगे वही होगा। क्या यह पार्टी दो लोगों की पार्टी बनकर रह गई है। इस पार्टी में कई महानुभवी योग्य नेता हैं लेकिन कई तो अपनी ही पार्टी में आवाज़ न उठा पाने के कारण भी पार्टी छोड कर चले गए। जब-जब जहां-जहां कांग्रेस जीती वहां परिवारवाद के प्रभाव में कार्यकर्ताओं से लेकर वरिष्ठ पदाधिकारियों ने एक स्वर में कहा कि यह सोनिया गांधी व राहुल गांधी के कुशल मार्गदर्शन व नेतृत्व के कारण हुआ। जबकि इस जीत में असली मेहनत वहां के स्थानीय नेताओं व कार्यकर्ताओं ने

की। वहीं इसके उल्टा जहां पार्टी हारी वहां फिर दबाव में आम कार्यकर्ता से लेकर पार्टी पदाधिकारियों ने यही कहा कि यह हार सोनिया गांधी व राहुल गांधी की बजह से नहीं हुई बल्कि स्थानीय नेताओं की आपसी कलह या उनकी कार्यशैली की हार है। अब इस तरह के विरोधाभास से कोई भी पार्टी ऊपर नहीं उठ सकती।

क्या यह वही पार्टी है जिसका नेतृत्व विश्व की सबसे शक्तिशाली महिला प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने किया था। बार- बार गलतियों को दोहराया जा रहा है आज कांग्रेस मानो अपंगता की स्थिति में है और हर चुनाव में अपने लिए क्षेत्रीय दलों को वैशाखी के रूप में ढूंढ रही है जबकि वही वैशाखियां उसे और अपंग बनाने में लगी हैं। आज भाजपा कुशल नेतृत्व में एक के बाद एक नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। आज देश का प्रत्येक दल भाजपा का विरोध करके चुनाव जीतना चाहता है जबकि जनता उन्हें नकार कर भाजपा का ही जनाधार बढा रही है। देश के लिए यह बहुत ही सुखद संदेश है कि कोई राजनैतिक पार्टी अकेले दम पर पूरे देश में आगे बढ़ रही है क्योंकि गठबंधन राष्ट्रीय पार्टियों को ही तकलीफ नहीं देता यह आम लोगों को भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

मध्यप्रदेश व राजस्थान के विधानसभा चुनावों में खुद को मिले समर्थन को यदि कांग्रेस पार्टी सकारात्मकता के साथ लेती तो उसे भी आम चुनावों में अपना खोया वजूद आज कफी हद तक मिल जाता। कांग्रेस को यह सोचना चाहिए कि आज देश वासी देश में एक या दो राष्ट्रीय पार्टियां देखना चाहते हैं न कि ब्लैकमेल करने वाले कुकरमुत्तों की तरह फैले असंख्य दलों को। उत्तर प्रदेश में कभी आपसी धुर विरोधी रही बसपा व समाजवादी पार्टी का आपस में गठबंधन करना दर्शाता है कि इन्हें देशहित से ज्यादा सत्ता सुख पाने की चिंता है और इनका एक ही मुख्य मकसद है की जैसे-तैसे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हटाया जाया जबकि देश के नागरिकों की भावनाओं का इन्हें रत्ती भर ख्याल नहीं रहा।

इन चुनावी परिणामों से एक बात तो साफ है कि भविष्य में क्षेत्रीय दलों को अपना अस्तित्व बचाए रखने के लिए नए सिरे से सोच विचार करना होगा। वहीं कांग्रेस को यह सोच अपनानी होगी की भाजपा को रोकने के लिए गठबंधन करने से वह उपर नहीं उठेगी बल्कि उसे खुद को अकेले दम पर बिना गठबंधन की वैशाखियों के उपर उठना होगा। देश के लिए जिस तरह एक शक्तिशाली पूर्ण बहुमत वाली सरकार जरूरी है उतना ही जरूरी है एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में शक्तिशाली विपक्ष न कि असंख्य दलों में फैला विपक्ष। भाजपा को भविष्य में और राज्यों में अपनी मौजूदगी दर्ज करवाने के लिए गठबंधन से परहेज करना चाहिए वहीं कांग्रेस को भी अपने पुराने खोए रूप में आने के लिए गठबंधन की राजनीति से उपर उठकर सोचना होगा।

आज देश में 'गठ बंधन' कम और 'लठ बंधन' ज्यादा दिखाई देता है। जीत हार किसी की हो जीत का असली खिलाड़ी मतदाता ही होता है उससे बढकर न कोई पार्टी न कोई नेता। इन चुनाव परिणामों से एक बात तो साफ है कि देश ने विरासत की राजनीति को अब नकार दिया है अब वह समय गया जब बाप भी नेता, बेटा-बेटी भी नेता और आगे पौत्र-पौत्रियां भी राजनीतिक विरासत को लेकर नेता बन जाते थे। देश का मतदाता तो इस चीज़ को भली-भांति समझ चुका है कि राजनैतिक विरासत में परिवारों की ठेकेदारी नहीं चलेगी। कुल मिलाकर इसे भाजपा या एनडीए की जीत की बजाए 'मोदी जीत' कहा जाया तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। ◆◆◆

बोर्ड परिक्षा में चमके सविमं भटेड़ के विद्यार्थी

सरस्वती विद्या मन्दिर वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भटेड़ में कक्षा 12 वीं में बहिन दिव्यांशी ने 89.41 अंक लेकर विद्यालय में प्रथम स्थान हासिल किया। सत्र 2018-19 में इस कक्षा में कुल 10 भैया/बहिनें थी। विद्यालय का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा। पूजा शर्मा 83 प्रतिशत अंक लेकर द्वितीय तथा भैया रिषभ शर्मा 81.2 प्रतिशत अंक लेकर तृतीय स्थान पर रहे। बहिन प्रिया ने 76.8, अदिती ने 76.4, अक्षिता ने 70.6, इशिता ने 69.2, सुनैना ने 65.4, अभय ने 76.6 तथा आयुष चौहान ने 70.4 अंक प्राप्त किए हैं। इसके साथ ही कक्षा दशम में भैया रक्षित ने हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड में 97.8 प्रतिशत अंक लेकर सातवां स्थान हासिल किया है। हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा आयोजित उत्तरी क्षेत्र निबंध प्रतियोगिता में कक्षा षष्ठ की बहिन अम्बिका शर्मा ने प्रथम स्थान हासिल किया है। ◆◆◆

कृषि विवि के सुझाए बीज ही किसानों को मिलेंगे

कृषि विभाग अब किसानों को कृषि विश्वविद्यालय की ओर से सुझाए गए बीज ही सप्लाई करेगा। यह बीज ज्यादा पैदावार देने में सक्षम होंगे ही, बीजों में अन्य बीमारियों से लड़ने के लिए भी क्षमता होगी। इससे किसानों को फसल में लगने वाले रोगों से भी काफी हद तक निजात मिल सकती है। कृषि विवि पालमपुर में खरीफ की फसल पर आयोजित कार्यशाला में किसानों को करीब 80 हजार रूपये के कृषि औजार उपलब्ध करवाने का फैसला लिया गया। जलवायु परिवर्तन को देख डेयरी, पोल्ट्री, मधुमक्खी पालन और मशरूम की खेती को अपनाने पर भी बल दिया गया। इससे युवा किसानों को भी इस खेती से जोड़ा जाएगा। कार्यशाला के दौरान किसानों को पॉली हाउस से उन्नत खेती की जानकारी दी गई। कृषि निदेशक डॉ. देसराज शर्मा ने कहा कि कृषि विभाग अब विभिन्न फसलों के केवल कृषि विवि की ओर से सुझाव गए बीज ही किसानों को उपलब्ध कराएगा। खरीफ की फसल पर हुई कार्यशाला में किसानों की आय मजबूत करने के लिए कई योजनाओं पर चर्चा की गई है। इनको जल्द लागू कर किसानों के खेतों तक ले जाया जाएगा। ◆◆◆

केसर की खेती से लहलहाये खेत दाड़लाघाट में, दाड़लाघाट के युवा किसान मनीष की मेहनत लाई रंग।

दाड़लाघाट के युवा मनीष चंदेल ने अपने खेतों में केसर की खेती कर इलाके में एक नई मिसाल पेश की है। मनीष चंदेल की पहल से इस क्षेत्र में भी केसर की फसल की संभावनाएं बढ़ गई हैं और वैसे भी लोग बंदरों के उत्पात से फसलें लगाना बंद कर रहे हैं, लेकिन यदि ऐसी फसलें उगाई जाएं, जिनसे नकदी भी मिले और लागत भी ज्यादा न आए तो लोगों का रूझान इस और बढ़ सकता है। मनीष चंदेल बताते हैं कि उत्पाती बंदर उनके खेतों को तबाह कर जाते थे। वह खेतों में खूब पसीना बहाकर मेहनत करते थे, लेकिन हाथ कुछ भी नहीं लगता था फिर उन्हें कहीं से सुझाव प्राप्त हुआ कि केसर की खेती को बंदर भी नुकसान नहीं पहुंचाते और इसमें लागत भी ज्यादा नहीं आती। मेहनत भी अधिक नहीं करनी पड़ती, बाजार में इसकी अच्छी खासी कीमत मिल जाती है। मनीष चंदेल ने गढ़वाल से केसर का बीज मंगाया और केवल परख करने के लिए केसर की बिजाई की, जिसमें अच्छी खासी कामयाबी मिल रही है। इस प्रकार मनीष चंदेल और किसानों के लिए भी एक प्रेरणा स्त्रोत बन गए हैं। ◆◆◆

आग लगने पर करें यह उपाय

यह मैसेज जनसाधारण के लिए है और बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसे कृपया अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य और खासकर बच्चों को अवश्य पढ़ाएं और समझाएं–

कई वर्ष पहले जे0 पी0 होटल वसंत विहार नई दिल्ली में आग की दुर्घटना हुई, जिसमें बहुत सारे भारतीय मारे गए लेकिन जापानी और अमेरिकन नहीं। जानते हैं क्यों?

1. सभी अमेरिकन और जापानी लोगों ने अपने कमरों के दरवाजों के नीचे खाली जगहों में गीले तौलिये लगा दिए और खाली जगहों को सील कर दिया, जिससे धुआं उनके कमरों तक नहीं पहुंच सका। या बहुत कम मात्र में पहुंचा।
2. इन सभी विदेशी मेहमानों ने अपनी नाक पर गीले रुमाल बांध लिए, जिससे उनके फेफड़ों में धुआं प्रवेश न कर सके।
3. सभी विदेशी मेहमान अपने अपने कमरों के फर्श पर औंधे लेट गए। क्योंकि धुआं हमेशा ऊपर की ओर उठता है।

इस प्रकार जब तक अग्निशमन विभाग के कर्मचारी आये, तब तक वे अपने आपको जीवित रख पाने में सफल रहे।

इसलिए आग लगने की स्थिति में ये सुरक्षा उपाय अपनाएं–

1. भगदड़ न मचाएं और अपने होश कायम रखें ताकि आप दूसरों की मदद कर सकें।
2. अपने नाक पर गीला रुमाल या गीला लेकिन घना कपड़ा बांधों। तथा फर्श पर लेट जाएं।
3. यदि आप किसी कमरे में बंद हों तो उसके खिड़की दरवाजे बंद कर दें तथा उनके नीचे या ऊपर या कहीं से भी धुआं आने की संभावना हो तो उस जगह को भी गीले कपड़े से सील कर दें।
5. अग्निशमन की सहायता की प्रतीक्षा करें। याद रखें, अग्निशमन वाले प्रत्येक कमरे की जांच करते हैं और वे फंसे हुए व्यक्तियों को ढूंढ लेंगे।
6. यदि आपका मोबाइल काम कर रहा हो तो आप लगातार 100, 101 या 102 पर मदद के लिए कॉल करते रहें। उन्हें आप अपने स्थान की जानकारी भी दें। वे आप तक सबसे पहले पहुंचेंगे। ◆◆◆

Biscco EMS
ISO 9001:2015 Certified Company

Plot No. 70, 70A, DIC. Industrial Area Baddi ,
Distt. Solan (H.P.)-173205 (INDIA)

Email: bisccoemstech@gmail.com
md@bisccoems.com

Contact : Narender Singh Bisht
01795-246316,98160-46116

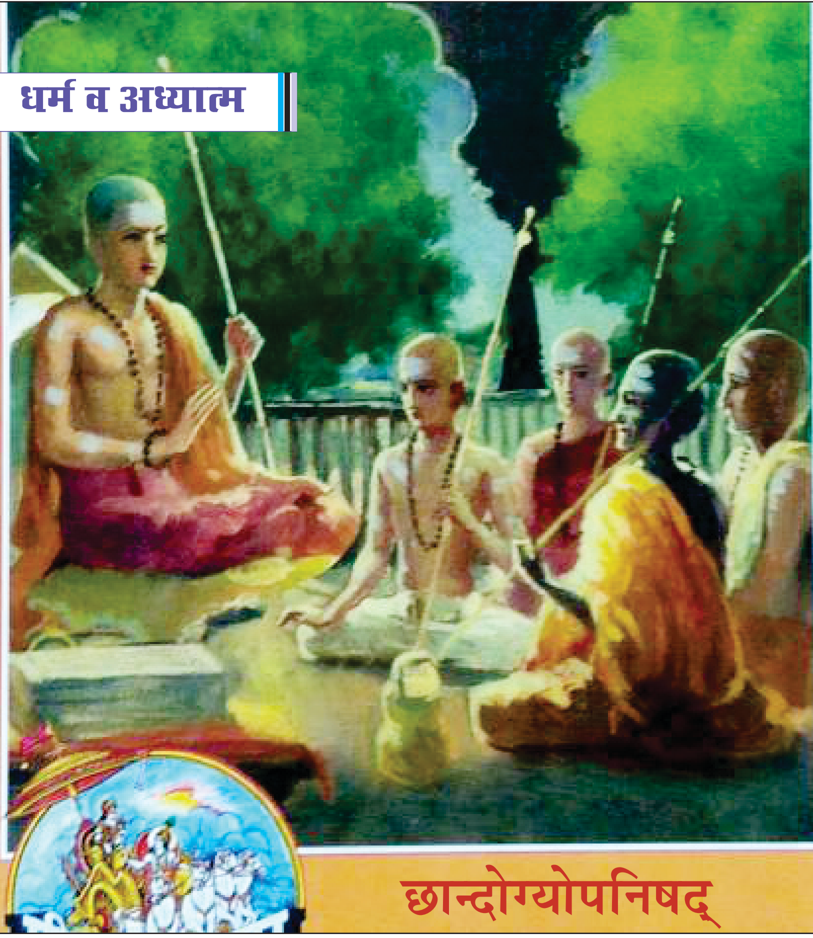

छान्दोग्योपनिषद्

अर्जुन श्री कृष्ण से बोले-

हे केशव! जब मृत्यु सभी की होनी है तो हम सत्संग भजन सेवा सिमरन क्यों करे जो इंसान मौज मस्ती करता है मृत्यु तो उसकी भी होगी। श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा- हे पार्थ! बिल्ली जब चूहे को पकड़ती है तो दांतो से पकड़कर उसे मार कर खा जाती है।

लेकिन उन्ही दांतों से जब अपने बच्चे को पकड़ती है तो उसे मारती नहीं बहुत ही नाजुक तरीके से एक जगह से दूसरी जगह पंहुचा देती है। दांत भी वही है मुह भी वही है पर परिणाम अलग अलग। ठीक उसी प्रकार मृत्यु भी सभी की होगी पर एक प्रभु के धाम में और दूसरा 84 के चक्कर में!

मातृवन्दना के मई अंक से पृष्ठ के एक नये स्तम्भ को प्रारम्भ किया जा रहा है। यह स्तम्भ सनातन धर्म पर आधारित होगा। विषय सामग्री श्रृंखलाबद्ध रूप में किसी एक धार्मिक ग्रन्थ से उद्धृत होगी, जिसे सामान्य पाठकों के लिए सहज और सरल शब्दों में प्रकाशित किया जाएगा। भारतीय दर्शन के मूल में वेद और उपनिषद् ग्रन्थों के सार से शुभारम्भ किया जा रहा है। इस अंक में इस स्तम्भ को छान्दोग्योपनिषद् से प्रारम्भ किया जा रहा है। छान्दोग्योपानिषद् सामवेदीय तलबकार ब्राहमण के अन्तर्गत आता है। सम्पादक के नोचनिसह भी इसी शाखा से सम्बन्ध रखता है। इसलिए इन दिनों का एक ही शान्ति पाठ है। यह उपनिषद् बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसमें तत्वज्ञान, उसके निमितकर्म तथा उपासनाओं का विशद वर्णन है। अद्वैत वेदान्त की प्रक्रिया के अनुसार जीव अविद्या की तीन शक्तियों से आवृत है। इन्हें मल, विक्षेप और आवरण कहते हैं। अन्त:करण के मलिन संस्कार जनित दोष 'मल' कहलाते हैं। इनकी निवृति निष्काम कर्म से होती हे। चित् की चंचलता 'विक्षेप' है। इसका नाश उपासना से होता है। अपने वास्तविक स्वरूप की विस्मृति अथवा अज्ञान 'आवरण' है। इसको ज्ञान से ही अनावृत किया जा सकता है। चित के इन तीनों दोषों के लिए ये निष्काम कर्म उपासना ज्ञान तीन औषधियां हैं। इन तीनों के द्वारा तीन ही प्रकार की गतियां होती हैं। सकाम सत् कर्मी लोग धूममार्ग से स्वर्गादि लोक प्राप्त कर पुण्यक्षीण होने पर पुन: जन्म लेते हैं। निष्काम कर्मी और उपासना सिद्ध पुरूष अर्चिरादि मार्ग से अपने उपास्य देव के लोक में जाकर अपने तपोबल के अधिकारानुसार सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य या सामुज्य मुक्ति प्राप्त करते हैं। इसी उपनिष्द् के पांचवे अध्याय में इन दोनों गतियों का विशुद्ध वर्णन किया गया है। तीसरी गति तत्वज्ञानी की है। उनके प्राणों का दूसरे लोकों में गमन नहीं होता। उनके शरीर यहीं अपने-अपने तत्वों में लीन हो जाते हैं और उन्हें इसी लोक में कैवल्य पद अथवा मोक्ष प्राप्त होता है। मोक्ष का साक्षात् साधन व ज्ञान ही है। बहुत सी श्रुतियां इसका प्रमाण है। निष्काम कर्म और उपासना मल और विक्षेप की निवृति करके ज्ञान द्वारा मुक्ति देते हैं। ज्ञान से आत्मसाक्षात्कार होता है। मुक्तात्मा के लिए संसार और सांसारिक बन्धन का अत्यन्त अभाव हो जाता है। उसके लिए केवल एक अखण्ड चिदानन्दघन सता ही रह जाती है। पञ्चकोशात्मक शरीर के रहते हुए भी वह विदेह हो जाता है। इसीलिए छान्दोग्योपनिषद् में कुल आठ अध्याय हैं। पहले पांच अध्यायों में प्रधानत: उपासनाओं का वर्णन है और अन्तिम तीन अध्यायों में ज्ञान का वर्णन किया गया है। सुगमता से समझने हेतु कई आरण्यायिकाएं भी दी गई हैं जिनसे काल के इतिहास और ऋषि परम्परा की जानकारी भी उपलब्ध होती है। आगामी अंक में छान्दोग्योपनिषद् के प्रथम अध्याय का उल्लेख किया जायेगा। ◆◆◆

पर्यावरण समस्या समाधान में योगदान दें

...✍ -डॉ. जगदीश गाँधी

डॉ. जगदीश गाँधी
संस्थापक-प्रबन्धक
सिटी मोन्टेसरी स्कूल, लखनऊ

मार्च 2014 में संयुक्त राष्ट्र की एक वैज्ञानिक समिति के प्रमुख ने चेतावनी दी है कि अगर ग्रीन हाउस गैसों का प्रदूषण कम नहीं किया गया तो जलवायु परिवर्तन का दुष्प्रभाव बेकाबू हो सकता है। ग्रीन हाउस गैसें धरती की गर्मी को वायुमंडल में अवरुद्ध कर लेती हैं, जिस से वायुमंडल का तामपान बढ़ जाता है और ऋतु चक्र में बदलाव देखे जा रहे हैं। समय की पुकार है कि अब कार्रवाई की जाये। ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन कम नहीं किया गया, तो हालात बेकाबू हो जाएंगे। नोबल पुरस्कार विजेता वैज्ञानिकों के दल द्वारा तैयार इस रिपोर्ट में कहा गया है कि यूरोप में जान लेवा लू, अमेरिका में दावानल, आस्ट्रेलिया में भीषण सूखा, मोजाम्बिक, थाईलैंड और पाकिस्तान में प्रलयकारी बाढ़ जैसी 21वीं शताब्दी की आपदाओं ने यह दिखा दिया है कि मानवता के लिए मौसम का खतरा कितना बड़ा है। रिर्पोट में कहा गया है कि जलवायु परिवर्तन का प्रभाव अधिक बढ़ा तो खतरा और बढ़ जाएगा।

अभी हाल ही में उत्तर भारत के कई राज्यों के साथ-साथ हिमालय पर स्थित नेपाल में आया भूकंप, उत्तराखण्ड में आई भीषण प्राकृतिक आपदा, जापान के पिछले 140 सालों के इतिहास में आए सबसे भीषण 8.9 की तीव्रता वाले भूकंप की वजह से प्रशांत महासागर में आई सुनामी के साथ ही यूरोप में जानलेवा लू, अमेरिका में दावानल, आस्ट्रेलिया में भीषण सूखा और मोजाम्बिक, थाईलैंड और पाकिस्तान में प्रलयकारी बाढ़ जैसी 21वीं शताब्दी की आपदाओं ने सारे विश्व का ध्यान इस अत्यन्त ही विनाशकारी समस्या की ओर आकर्षित किया है। कुछ समय पूर्व पर्यावरण विज्ञान के पितामह जेम्सलवलौक ने चेतावनी दी थी कि यदि दुनिया के निवासियों ने एकजुट होकर पर्यावरण को बचाने का प्रभावशाली प्रयत्न नहीं किया तो जलवायु में भारी बदलाव के परिणामस्वरूप 21वीं सदी के अन्त तक छः अरब व्यक्ति मारे जायेंगे। संसार के एक महान पर्यावरण विशेषज्ञ की इस भविष्यवाणी को मानव जाति को हलके से नहीं लेना चाहिए।

आज जब दक्षिण अमेरिका में जंगल कटते हैं तो उस से भारत का मानसून प्रभावित होता है। इस प्रकार प्रकृति का कहर किसी देश की सीमाओं का नहीं जानती। वह किसी धर्म किसी जाति व किसी देश व उस में रहने वाले नागरिकों का पहचानती भी नहीं। वास्तव म आज पूरे विश्व के जलवायु में होने वाले परिवर्तन मनुष्यों के द्वारा ही उत्पन्न किये गये हैं। परमात्मा द्वारा मानव को दिया अमूल्य वरदान है पृथ्वी, ले किन चिरकाल से मानव उसका दोहन कर रहा है। पेड़ों को काटकर, नाभिकीय यंत्रों का परीक्षण कर वह भयंकर जल, वाय और ध्वनि प्रदूषण फैला रहा है। जिस पृथ्वी का वातावरण कभी पूरे विश्व के लए वरदान था आज वह अभिशाप बनता जा रहा है।

डेनमार्क की राजधानी कोपेनहेगेन में दिसम्बर, 2010 में आयोजित सम्मेलन में दुनिया भर के 192 देशों से जुटे नेता जलवायु परिवर्तन से संबंधित किसी भी नियम को बनाने में सफ़ल नहीं हुए थे। इस सम्मेलन के तुरंत बाद आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ब्राउन ने कहा कि 'यह तो बस एक पहला कदम है, इसे कानूनी रूप से बाध्य कारी बनाने से पहले बहुत से कार्य किये जाने हैं।' सार्वभौमिक हित का मसला होते हुए भी यहाँ राष्ट्रीय हितों का विकट टकराव है। हमारा मानना है कि कई दशकों से पर्यावरण बचाने के लिए माथापच्ची कर रही दुनिया अब अलग-अलग देशों के कानूनों से ऊब चुकी है। विश्व की कई जानी-मानी हस्तियों का मानना है कि अब अंतर्राष्ट्रीय अदालत बनाने का ही रास्ता बचा है, ताकि हमारी गलतियों की सजा अगली पीढ़ी को न झेलनी पड़ी। ◆◆◆

मातृवन्दना पत्रिका में अप्रैल 2019 से मार्च 2020 के बीच प्रत्येक अंक में प्रकाशित सर्वश्रेष्ठ संपादक के नाम पत्र लेखकों को सम्मानित करने की योजना है। अतः इच्छुक पाठक अपनी प्रतिक्रिया अपने पूर्ण पते के साथ संपादक कार्यालय, मातृवन्दना संस्थान, डॉ0 हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 को प्रति माह भेजते रहें। इस प्रकार भेजे हुए पत्रों को आगामी अंकों में क्रमशः प्रकाशित किया जाएगा

चुराह में पांच पीढ़ियों का एक घर

... ✍

मकान तो इन दिनों एक से बढ़ कर एक हैं। सुंदर भी, सुहावने भी। लेकिन इनमें से घर कितने हैं, यह शोध का विषय हा सकता है। कुछ घरों में बच्चों की किलकारियां होती हैं तो बुजुर्गों की खांसने वाली आवाज नहीं होती। कहीं दादी की कहानियां नहीं होती तो कुछ घरों के टीवी सिर्फ कार्टून नेटवर्क की आवाज करते हैं। एकल परिवार या न्यूक्लियर फेमिली की सोच वस्तुतः संयुक्त परिवारों के लिए आघात से कम नहीं है। लेकिन एक भरा पूरा परिवार चम्बा जिला के चुराह क्षेत्र में भी है। ग्राम पंचायत तीसा-2 के रलहेरा गांव के इस परिवार की खास बात यह है कि इसमें पांच पीढ़ियां एक साथ एक ही छत के नीचे रह रही है। 27 सदस्यों वाले इस संयुक्त परिवार का स्तंभ 92 वर्षीय बानों बेगम हैं। घर का सबसे छोटा सदस्य उनकी चार साल की परपोती है। परिवार के सदस्य 20 कमरों वाले मकान में रहते हैं। इनके पास करीब 30 बीघा जमीन है, जिनमें से एक सेब का बगीचा भी है। जबकि, इनकी संपति में छोटी-बड़ी छह गाड़ियां भी शामिल हैं। बानो बेगम के मुताबिक परिवार के कभी अलग होने के बारे में नहीं सोचा। क्योंकि, सभी संयुक्त परिवार में विश्वास रखते हैं। घर के सभी सदस्यों को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं, जिन्हें वे ठीक से निभाते हैं। परिवार की सबसे बुजुर्ग महिला बानो बेगम गृहिणी हैं। उनके एक पुत्र अब्दुल मजीद सेवानिवृत्त पंचायत निरीक्षक हैं। एक बहू सिलाई अध्यापिका तथा अन्य पांच बहुएं गृहिणियां हैं। अब्दुल मजीद के छह बेटे हैं, जिनमें से दो सरकारी ठेकेदार, दो सरकारी कर्मचारी तथा दो दुकानदार हैं। जहां बर्तन होंगे, टकराएंगे भी। हर परिवार में नोकझोंक चलती ही है। यहां कभी कभार कुछ नोकझोंक या छोटा-मोटा झगड़ा होने पर परिवार के बुजुर्ग सदस्य निपटारा करते हैं।

परिवार की बड़ी बहू खानपान का जिम्मा संभालती हैं, जबकि छोटी बहुएं खाना बनाने से लेकर खिलाने तक उनकी मदद करती हैं। सुबह से शाम तक बनने वाले भोजन का मेन्यू तैयार किया जाता है। उसी के मुताबिक खाना बनाया जाता है। इसी तरह घर में साफ-सफाई से लेकर अन्य छोटे-बड़े कार्य भी बहुएं ही संभालती हैं। परिवार का शुरू से ही यह नियम रहा है कि घर के सभी सदस्य एक साथ ही खाना खाएंगे। खाना तैयार होने के बाद एक कमरे में चटाई बिछाई जाती है। सबसे पहले छोटे बच्चों को खाना परोसा जाता है। बच्चों के खाना खाने के उपरांत घर की बुजुर्ग महिलाओं सहित अन्य खाना खाते हैं। परिवार का मानना है कि एक साथ खाना खाने से जहां बरकत बढ़ती है। वहीं, परिवार में प्यार भी बढ़ता है।◆◆◆

अमेरिकी कारोबारी रॉबर्ट स्मिथ ने 400 छात्रों का 208 करोड़ रूपये का कर्ज चुकाया

अरबपति निवेशक और परोपकारी रॉबर्ट एफ स्मिथ अटलांटा के मोरहाउस कॉलेज से इस साल ग्रेजुएशन करने वाले करीब 400 छात्रों का 4 करोड़ डॉलर 280 करोड़ रूपये का स्टूडेंट लोन चुकाएंगे। स्मिथ ने कॉलेज के दीक्षांत समारोह में यह ऐलान किया। स्मिथ विस्टा इक्विटी पार्टनर्स के फाउंडर और सीईओ हैं। उनकी फर्म सॉफ्टवेयर, डेटा और टेक्नोलॉजी कंपनियों में निवेश करती है। स्मिथ के ऐलान से कॉलेज फैकल्टी और स्टूडेंट चौंक गए। कॉलेज का कहना है कि यह अब तक का सबसे बड़ा तोहफा है। मोहराउस अश्वतों का कॉलेज है। स्मिथ खुद भी अश्वेत हैं। उन्होंने कहा कि हम 8 पीढ़ियों से अमेरिका में रह रहे हैं। इसलिए मेरा परिवार कुछ योगदान देना चाहता है। एक छात्र ने पिछले दिनों गणना की थी कि उसे 2 लाख डॉलर का स्टूडेंट लोन चुकाने में 25 साल लग जाएंगे। इसके लिए उसे हर महीने अपनी आधी सेलरी देनी होगी। ऐसे में स्मिथ का ऐलान बेहद अहम है। दीक्षांत समारोह के दौरान स्मिथ को मोरहाउस कॉलेज की ओर से डॉक्टरेट की मानद उपाधि दी गई। वे कॉलेज के लिए 11 करोड़ रूपये देने का एलान पहले ही कर चुके हैं। छात्रों के उपर लगातार बढ़ता जा रहा कर्ज इस समय अमेरिका में राष्ट्रीय स्तर का मुद्दा बन गया है। राष्ट्रपति पद के लिए दावेदारी पेश कर रहे डेमोक्रेटिक पार्टी के कई सांसदों ने इस पर चिंता भी जाहिर की है। इसे मुद्दा भी बनाया है। फिच एजेंसी की रेटिंग के मुताबिक अमेरिका के छात्रों पर इस समय 105 लाख करोड़ रूपये का कर्ज बकाया है।◆◆◆

मावअ

मावअ ममता री कामधेणू
कने प्यारा री गागर।
इसा गागरा रे पाणिये च,
युगां-युगां ते बैहन्दे करोड़ा सागर।
मवअ पगवाना री घड़तर अणमोल,
इस रिश्ते रा दुणिया च अणचुक मोल।
जण्म दित्या पालया पोसया,
घरा च गंगा नवाअया।
फाके रहीणे वी अपणी गोद खलाया,
मावअ हुन्दी ममता री खाण,
ठसारे पैरां हेठ सुरग धाम
सबणी ते पैहले कंठ पुकारे,
मावअे तेरा ही नांव।
मावड़ां री गोदां हुन्दी ठंडी छांव,
मावआं री गोदां हुन्दी ठंडी छांव।

रवि कुमार, बिलासपुर हि0प्र0

'गीत'

सजणा संझ होई गेई
तू न आया के गल्ल
सजणा संझ होई गेई...
आखड़ू हेरदे बत्तां पुर
न्हेरा लकजो पाया के गल्ल
सजणा संझ होई गेई.....
औंदी तकदी खिड़की पुर
कईबरी हटी गेई त्रस कर
सजणा संझ होई गेई..
चौंआ पास्से लैटां बल्लीयाँ
फोन बी पेया है कजो बन्द
सजणा संझ होई गेई.....
इआं न सनांदे सजणा
किजो टैमे नी औंदे के गल्ल
सजणा संझ होई गेई....

कश्मीर सिंह
चम्बा (हि.प्र.)

परिवार की धुरी मां

प्रेम करुणा, सहनशीलता, स्नेह त्याग, ममतामयी,
ईश्वर का प्रतिरूप ।
परिवार की धुरी, रिश्तों की डोर, मीठी लोरी,
हौंसला पहाड़ सा, होती है माँ ।।
कोरे कागज सा बचपन, संस्कारों के,
स्नेहमयी स्पर्श से, सहेजती, संवारती ।
धूप में छाँव बन, दर्द में दवा बन, अवैतनिक,
जिन्न सी, दायित्व निभाती, जीवन संघर्ष है माँ ।।
प्रथम गुरु, दोस्त, शिक्षिका, न जाने कितने,
अथाह शब्द, छुपे हैं माँ रूपी, अनमोल एहसास में ।
स्कूल की छुट्टी पर, इंतजार में बैठी, सखियों से बतियाती,
कुछ पल चुराती, सतरंगी सपने बुनते-बुनते,
भरपूर जीवन, जी लेती है माँ ।।
ऊनी स्वेटर के डिजाईन में, बेटी के बालों की चोटियाँ बनाती,
गुल्लक सी, खुशियाँ तलाशती ।
अखबारों की सुर्खियों से, सहम कर,
यूं ही बेवजह, बेटी को गले, लगा लेती है माँ ।।
माँ से मायका, एहसास पूर्णता का, दुल्हन बनी बेटी की,
कलीरों में दुआ बन, फिर सास रूपी ढाल, बन जाती है माँ ।
रस्मों रिवाज निभातेख्रनिभाते, दूल्हा बने बेटे को,
देवड़ी पर गोद में बिठा, उम्र भर के लिए,
ममता दामन में, समेट लेना चाहती है माँ ।।
मुंडेर पर दीप जलाये, शहरी बने बेटे के लौटने की आस,
सरहद पर डटे बेटे की, सलामती की दुआ,
में शामिल करुणा सी है माँ ।
जीजाबाई, सिंधुताई सपकाल, मंदाकिनी आम्टे जैसी,
अनेकों वातसल्य की मूरत का,
परिवार, समाज से विश्वपटल तक का सफर,
सशक्त, सक्षम, बनाती है माँ ।।
आसमां की बुलंदी, सागर की गहराई जितना,
आदि से अनंत तक किसी ग्रंथ में भी,
न समाये, ऐसा शब्द है माँ ।
प्रकृति सी निस्वार्थ, बस देना जाने, है इतनी सी ख्वाहिश,
की खुशियों के कुछ पल, बच्चों से ले उधार, बचपन दुबारा जीना,
चाहती है माँ ।।

उमा ठाकुर, पंथाघाटी, शिमला

ALPINE PUBLIC SCHOOL
NALAGARH
LEAD KINDLY LIGHT

ALPINE
PUBLIC SCHOOL

Nurturing Talent - Empowering Values

Topped in 10+2 CBSE Exams in BBN Area for 3 consecutive years.
42 students awarded Medals at National, State & Distt. Level Sports Events.
Highest Rank in PMT in BBN Area (10th rank in all HP).
11 students with 10 CGPA in 2018 10th CBSE Board Exams.
Prizes to students in National Children Science Congress.
22 students awarded Medals at National & State Level Music Competitions.
5 students secured position among Top 10 ranks in International English Olympiad.

> Projector Smart Classes
> English Language Lab
> Day Boarding facility
> 100% result in CBSE Boards
> Teacher student ratio of 1:20
> CCTV secured campus
> National level participation in Science & Sports competitions.
> Transport facility in full BBN area.

Address : Chowkiwala, Near New Nalagarh, Nalagarh, Distt. Solan, HP.
Contact : 9816065097, 9816638097, 01795-222997
Visit : www.alpinenalagarh.com   Email : aps.nalagarh@gmail.com

मधुमेह से बचाएगा काला गेहूं

आप अगर मधुमेह और कॉलेस्ट्रॉल से जूझ रहे हैं तो आपको जल्द एक राहत भरी खबर मिलेगी। इनसे लड़ने वाला और पोषक तत्वों से भरपूर काला और गुलाबी गेहूं जल्द बाजार में होगा। जैव प्रौद्योगिकी विभाग इस नई किस्म को जल्द ही बाजार में लाने की तैयारी में है। कहा जा रहा है कि विभाग द्वारा विकसित यह किस्म आम गेहूं से ज्यादा पौष्टिक है। चूहों पर इसके परीक्षण में पाया गया है कि यह मधुमेह और कॉलेस्ट्रॉल से बचाव में भी कारगर है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग इसका पेमैंट भी हासिल कर चुका है और इसे बाजार में उतारने को 10 कम्पनियों के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं।

एंटी-ऑक्सीडैंट बढ़ाएगा- इस गेहूं में एंथोसायनिक प्रचुर मात्रा में हैं जो ब्लूबेरी, ब्लैकबेरी या जामुन आदि फलों में पाए जाते हैं। इनकी मौजूदगी एंटी-ऑक्सीडैंट की कमी कई रोगों का इलाज बनती है जिसमें कैंसर, दिल की बीमारियां और जल्दी बुढ़ापा आना शामिल है। जैव प्रौद्योगिकी विभाग के मोहाली स्थित नैशनल एग्री बायोटैक्नोलॉजी इंस्टीच्यूट एन.ए.बी.आई. की वरिष्ठ वैज्ञानिक मोनिका गर्ग की टीम ने यह गेहूं किस्म विकसित की है। गेहूं के लैब परीक्षण के दौरान इसमें एंटी-ऑक्सीडैंट तत्वों के साथ-साथ कई विटामिन, खनिज, प्रोटीन और खाद्य फाइबर की मात्रा ज्यादा पाई गई है। ◆◆◆

अंकुरित ब्रोकोली से होगी सिजोफ्रेनिया के लक्षणों में कमी

एक रिसर्च में खुलासा हुआ है कि अंकुरित ब्रोकोली के सेवन से सिजोफ्रेनिया के लक्षणों की कम किया जा सकता है। सिजोफ्रेनिया एक तरह का मनोरोग है जिसकी वजह से व्यक्ति अपनी काल्पनिक दुनिया में जीने लगता है।

Dr. Hem Raj Sharma

Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU

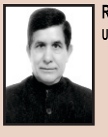

RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"

JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre

Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

हार्ट अटैक से हृदय को उबारेगी जीन थैरेपी

कैसे

लंदन: वैज्ञानिकों ने एक ऐसी जीन थैरेपी विकसित की है जिससे हार्ट अटैक की वजह से क्षतिग्रस्त हुए हृदय को ठीक किया जा सकेगा। हृदय की धमनियों के अचानक ब्लॉक होने के कारण हार्ट अटैक होता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक दुनियाभर के 2.3 करोड़ लोग इससे पीड़ित है। हार्ट अटैक के बाद हृदय संरचना क्षतिग्रस्त हो जाती है। भविष्य में इससे हार्ट अटैक फेल भी हो सकता है। ब्रिटेन के किंग्स कॉलेज लंदन के वैज्ञानिकों के मुताबिक माइक्रोआर.एन.ए-199 नामक जीन थैरेपी क्षतिग्रस्त हुए हृदय की मुरम्मत में हृदय कोशिकाओं की सहायता करती है। सुअरों पर किए गए परीक्षण के बाद वैज्ञानिकों ने कहा कि जीन थैरेपी से केवल एक महीने में ही हृदय की पूरी मुरम्मत हो जाती है और वह पहले की तरह काम करने लगता है। चिकित्सकीय ट्रायल शुरू करने से पहले अभी इस थैरेपी के कई और परीक्षण किए जाएंगे। ◆◆◆

बोर्ड की परीक्षाओं से छात्रों में बढ़ता अवसाद

...नीतू वर्मा

लोक सभा चुनाव की सरगर्मी को दरकिनार करते हुए, हाल के कुछ सप्ताह केंद्र तथा राज्य स्तर के 10वीं व 12वीं की परीक्षाओं के परिणाम के कारण सुर्खियों में रहे। चाहे वह अपने बच्चों की उपलब्धियों को दुनिया के साथ साझा करते लोगों के ट्वीट हों, सोशल मीडिया पर शेयर की गई तस्वीरें व परिणाम या अखबारों में स्कूलों के परिणाम को बताते समाचार, प्रत्येक व्यक्तिइन परीक्षा परिणामों पर अपना वक्तव्य या सुझाव देता दिखाई दिया।

सीबीएसई द्वारा जारी किए गए आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2019 में 94,299 बच्चों ने 12वीं की परीक्षा में 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त किए जबकि 17,690 छात्रों ने 95 प्रतिशत से अधिक अंक लिए। 1,818 छात्रों ने अर्थशास्त्र विषय में, 660 ने राजनीतिक शास्त्र, 497 ने हिंदी व 478 ने अंग्रेजी विषय में अधिकतम 100 अंक प्राप्त किए। देश भर से लगभग 13 लाख छात्रों ने इन परीक्षाओं में भाग लिया और परीक्षा परिणाम 83.40 प्रतिशत रहा। वहीं यदि हम हिमाचल प्रदेश के 12वीं के नतीजों पर नजर दौड़ाएं तो प्रदेश में इस वर्ष लगभग 96 हजार बच्चों ने बारहवीं की परीक्षा में भाग लिया जिनमें से 62.01 प्रतिशत छात्र उत्तीर्ण घोषित किए गए। प्रदेश में कला संकाय में प्रथम स्थान पाने वाली छात्रा अश्मिता ने 96.4 प्रतिशत तो विज्ञान संकाय में प्रीती ने 98.8 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। इसी प्रकार दसवीं कक्षा के परीक्षा परिणामों में भी सीबीएसई का परीक्षा परिणाम 91.01 प्रतिशत रहा तथा लगभग 18 लाख छात्रों में 13 छात्रों ने 500 में से 499 अंक हासिल कर देश भर में प्रथम स्थान हासिल लिया। हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड का दसवीं का परीक्षा परिणाम 60.79 प्रतिशत रहा जिसमें हमीरपुर के अथर्व ने 700 में से 691 अंक हासिल करके पहला स्थान प्राप्त किया। इसी प्रकार देश भर के तमाम राज्य शिक्षा बोर्डों का परीक्षा परिणाम भी आया जिसमें अनेकों मेधावी छात्रों ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया।

इन आंकड़ों को देखने पर एक सुखद अनुभूति का अनुभव होता है। एक ऐसा अनुभव जो एक ओर तो अन्य छात्रों को और अच्छा करने की प्रेरणा देता है वहीं उनमें परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ कर पाने के लिए प्रेरित भी करता है। यदि हम वर्तमान समय के परीक्षा परिणामों की तुलना पिछले 15 से 20 वर्षों के परिणामों से करें तो इनमें अनेक बदलाव नजर आते हैं। सबसे पहला बदलाव परीक्षा परिणामों में पासिंग मार्क्स व सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों के अंकों में नजर आता है, जिसमें गत दशक में वृद्धि हुई है। इस परिवर्तन के फलस्वरूप हम इस अवस्था पर पहुँच गए हैं कि वर्तमान पीढ़ी के युवा असफलता को सहन करने में असक्षम दिखाई पड़ते हैं। हाल ही में तेलंगाना शिक्षा बोर्ड के नतीजों में अनुतीर्ण रहने के कारण लगभग 20 छात्रों द्वारा आत्महत्या करना इसका एक जीता जागता उदाहरण है।

यह केवल अकेली घटना नहीं है वरन ऐसी अनेक घटनाएं हमारे समक्ष हैं जिसमें युवाओं द्वारा असफलता के कारण अपनी जीवन लीला को ही समाप्त कर दिया गया हो। वर्तमान पीढ़ी पर अच्छे परिणाम देने का दबाव इस कदर हावी हो गया है कि वे किसी भी कीमत पर इसे पाने के लिए लालायित रहते हैं। ये परीक्षा परिणाम केंद्र और राज्य शिक्षा बोर्ड के मध्य विद्यमान अंतर को भी उजागर करता है। परीक्षा परिणामों के प्रतिशत में विद्यमान अंतर तथा परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्रों के प्रतिशत का अंतर निःसंदेह कुछ ऐसे प्रश्न खड़े करता है जिनका उत्तर हमारे शिक्षाविदों को देना आवश्यक है। यदि हम सीबीएसई के गत वर्षों के परीक्षा परिणामों पर नजर डालें तो अनेक ऐसे अपवाद नजर आएंगे जो मूल्यांकन प्रक्रिया पर सवाल खड़े करता है।

यदि 95 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों की संख्या को देखें तो इसमें वर्ष 2016 की तुलना में वर्ष 2019 में लगभग 90 प्रतिशत का इजाफा हुआ है, सम्पूर्ण भारत में टॉप करने वाले छात्रों के अंकों में भी निरंतर वृद्धि हुई है जो अब 500 में से 499 अंक तक पहुँच गया है। अच्छे परिणाम का यह दबाव केवल छात्रों तक ही सीमित नहीं है अपितु अभिभावक, शिक्षक और विद्यालय भी इसका हिस्सा हैं। अच्छा परिणाम लाना आवश्यक है परन्तु इसके लिए छात्रों व शिक्षकों पर दबाव डालना कदापि उचित नहीं है। इस दिशा में एक साकारात्मक पहल की बहुत अधिक आवश्यकता है। देश के सभी राज्य स्तरीय शिक्षा बोर्डों में ऐसे बदलाव किये जाने चाहिये कि केंद्रीय व राज्य स्तरीय शिक्षा बोर्डों में विद्यमान खाई को दूर किया जा सके। ◆◆◆

मैं अपनी झांसी नही दूंगी।

...-डॉ. अर्चना गुलेरिया

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में केवल पुरूषों ने ही मर मिटकर अपनी जिन्दगियां तबाह की थी, अपितु वीर बांकुरी नारियां भी घर की चारदीवारी से बाहर निकली थी और उन्होंने भी बहादुरी तथा अदम्य साहस का परिचय देते हुए रणभूमि में युद्ध कर दुश्मनों के दांत खट्टे कर दिए थे। कौन नहीं जनता कि सन् 1857 के स्वातंत्र्य समर में महारानी लक्ष्मी बाई ने इग्लैंड की अपार शक्ति को छका कर छक्के छुड़ा दिए थे। झांसी की महारानी भी जंगे-आजादी में विशिष्ट योगदान करने वाली अविस्मरणीय एक ऐसी ही वीरांगना थी। जिस समय अंग्रेज शासक देशी रियासतों को एक-एक करके अपनी अधीनता स्वीकार कराने जा रहे थे और उनके राज्यों को अपने में मिलाते जा रहे थे तभी रानी लक्ष्मी बाई ने कहा था- 'मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी'।

लक्ष्मी बाई का बचपन का नाम मनु था। झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ मनु का विवाह बाड़ी धूमधाम से हुआ था । विवाहोपरांत मनु का नाम परिवर्तित कर लक्ष्मीबाई रख दिया गया । इस प्रकार बाल्यकाल की मनु और छबीली नाम की बालिका झांसी की रानी लक्ष्मीबाई बन गई। मनु ने बचपन में ही तीर चलाना, घुड़सवारी करना बन्दूक चलाना, आदि विद्याएं सीख ली थी।

विवाह के कुछ वर्षों बाद रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया लेकिन दुर्भाग्य वश कुछ महिनों बाद बालक की मृत्यु हो गई। झांसी में सर्वत्र शोक हो गया। पुत्र के गम में राजा गंगाधर राव भी चल बसे। रानी पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। तब दरबार के लोगों ने उन्हें पुत्र गोद लेने की सलाह दी। अस्तु अपने ही परिवार के एक पंच वर्षीय बालक को उन्होंने गोद लेकर अपना दत्तक पुत्र बनाया। बालक का नाम दामोदर राव रखा गया। वो राजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात् झांसी की जनता की जिम्मेवारी महारानी लक्ष्मी बाई के कंधों पर आ गई। लक्ष्मीबाई ने मन में निश्चय किया " झांसी के लोगों का भाग्य अब मेरे हाथों में है, मैं उनका विश्वास नहीं तोड़ूंगी"।

महारानी लक्ष्मी बाई ने अपने को अच्छी तरह से राज-काज चलाने के लिए तैयार किया। अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को मान्यता दिलाने के लिए अंग्रेज जनरल को प्रस्ताव भेजा परन्तु महारानी के इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया गया। अंग्रेज चाहते थे कि झांसी की साम्राज्य भी हड़प लें लेकिन इस वीरांगना के सामने उनकी एक न चली। बाद में अंग्रेजों ने दिल्ली को जीतकर अपने कब्जे में ले लिया। कानपुर और अवध पर कब्जा करने के पश्चात अंग्रेज झांसी पर भी कब्जा करना चाहते थे। रानी झांसी ने अपनी पूरी ताकत के साथ डटकर अंग्रेजों का मुकाबला किया। आठ दिन तक लगातर किले पर गोले बरसाते रहे परन्तु झांसी का किला न जीत सके। झांसी के एक सरदार दूल्हा सिंह को सर ह्यूरोज अंग्रेज सेनापति ने लालच देकर अपनी ओर मिला लिया। झांसी की बहादुर फौज ने अपनी रानी के नेतृत्व में मजबूती से दुश्मन का मुकाबला किया। महारानी ने अपने समस्त सेनापतियों को इकट्ठा किया और कहा-"हमें हिम्मत नहीं छोड़नी है हम अकेले भी अंग्रेजों से लड सकते हैं सेनापतियों ने निर्णय किया।- जब तक एक भी आदमी जीवित रहेगा, हम डटकर प्राण-पण से दुश्मन से लड़ते रहेंगे"।महारानी लक्ष्मी बाई अपने घोड़े पर सवार होकर शेरनी की तरह अंग्रेजी सेना पर टूट पड़ी। अन्त में रानी युद्ध में बुरी तरह जख्मी हो गई। दिनांक 18 जून, 1858 को क्रान्ति की यह ज्योति हमेशा-हमेशा के लिए लुप्त हो गई। उसी कुटिया के निकट एक चिन्ता तैयार की गई। महारानी का पार्थिव शरीर एक चिता पर रखा गया। उनके पुत्र दामोदर राव ने चिता में अग्नि प्रज्जवलित की और महारानी की काया धू-धू कर जलने लगी। महारानी लक्ष्मीबाई मर की भी अमर हो गई। वास्तव में ही नारी-गौरव महारानी लक्ष्मी बाई राष्ट्र-रक्षा के लिए आत्मोसर्ग करने वाली वीरांगनाओं में अग्रगण्य थी। इस स्वतंन्त्रता की उपासिका ने क्रान्ति की जो ज्योति जलाई वह निरन्तर प्रकाशमान होती गई। आज भी उसकी अमर गाथा घर-घर में गूंज रही है-

"बुन्देले हर बोलों के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी"।

प्राणायाम से बच्चों की मानसिक सेहत सुधारने की कोशिश

इंग्लैंड सरकार ने छात्रों के मानसिक विकास के लिए स्कूल के पाठ्यक्रम में माइंडफुलनेस नाम का एक नया विषय जोड़ा है। इसके तहत उन्हें प्राणायाम सिखाया जाएगा। इससे उनका मन शांत रहेगा। इस विषय के तहत उन्हें आराम करने और होशियार बनने की तकनीक भी सिखाई जाएगी। इसे शुरूआती तौर पर देशभर के 370 स्कूलों में इसे शुरू किया जा रहा है। दावा है कि स्कूल में बच्चों की मानसिक सेहत का ध्यान रखने के लिए शुरू किया गया यह दुनिया का सबसे बड़ा ट्रायल है। इसका मकसद स्कूल प्रशासन को बच्चों के संपूर्ण स्वास्थ्य विकास के लिए तैयार करना है। इंग्लैंड सरकार इस मेंटल हेल्थ ट्रायल को 2021 तक चलाएगी। उम्मीद की जा रही है कि इससे मिलने वाले नतीजे सभी स्कूलों के पाठ्यक्रम में सकारात्मक बदलाव कराएंगे, जिससे बच्चों की मानसिक स्थिति बेहतर होगी। ◆◆◆

अबुधाबी में हिंदी अदालत की तीसरी भाषा

अबुधाबी न्यायिक विभाग ने अरबी और अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी को शहर की अदालत में बोली जाने वाली तीसरी आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दे दी है। स्थानीय अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक, अबुधाबी न्यायिक विभाग ने कहा कि इस कदम का मकसद विदेशियों को बिना भाषाई बाधा के मुकदमेबाजी की प्रक्रिया, उनके अधिकार व कर्तव्य के बारे में सीखने में मदद करना है। आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, संयुक्त अरब अमीरात की आबादी 90 लाख से ज्यादा है, जिसमें 88.15 फीसदी प्रवासी मजदूर हैं। इस आबादी में 38 फीसदी भारतीय हैं। विदेशी मंत्री सुषमा स्वराज ने सोमवार को कहा कि अबुधाबी द्वारा अपनी अदालतों में हिंदी को एक आधिकारिक भाषा के तौर पर घोषित करने से उस देश में रहने वाले भारतीयों के लिए न्याय अधिक आसान और सुलभ बनेगा। ◆◆◆

चीन में 13000 आतंकी गिरफ्तार

कब

चीन में सन् 2014 से अब तक करीब 13000 आतंकियों को गिरफ्तार किया गया है। इन आतंकियों को चीन के पश्चिमी क्षेत्र में स्थित शिनजियांग से गिरफ्तार किया है। सरकार ने अपने एक श्वेत पत्र में कहा कि कानूनी संस्थाओं ने ऐसी नीति अपनाई है जो उदारता और क्रूरता के बीच एक संतुलन कायम करती है। 2014 से शिनजियांग ने 1588 हिंसक और आतंकी गिरोहों को नष्ट किया है। 12,995 आतंकियों को गिरफ्तार किया गया है, 2,052 विस्फोटक सामग्री एवं उपकरण जब्त की गई है, 30,645 लोगों को 4,858 धार्मिक गतिविधियों की वजह से सजा दी गई है। धर्म से जुड़ी 345,229 गैर-कानूनी मजहबी प्रचार सामग्री को भी सीज किया गया है। श्वेत पत्र में कहा गया है कि जो लोग कट्टरपंथ को बढ़ावा देंगे उनसे सख्ती से निपटा जाएगा ◆◆◆

नौणी विवि का छात्र फ्रांस में देगा पोस्टर प्रस्तुति

नौणी विवि के डॉक्टरेट छात्र कृष्ण लाल गौतम को 20 से 22 मई के बीच फ्रांस के मोंटपेलियर में आयोजित होने वाली चौथी विश्व एग्रोफोरेस्ट्री कांग्रेस में पोस्टर प्रेजेंटेशन करने के लिए चुना गया है। इस कांग्रेस के लिए प्रस्तुत सार के आधार पर विश्व एग्रोफोरेस्ट्री कांग्रेस की वैज्ञानिक समिति की ओर से कृष्ण लाल को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए एक हजार 921 यूरो की राशि भी दी जाएगी। इसमें पंजीकरण और अन्य शुल्क के लिए 340 यूरो शामिल हैं, जबकि यात्रा, आवास, वीजा आदि को सुविधाजनक बनाने के लिए एक हजार 481 यूरो का भुगतान किया जा रहा है। कृष्ण लाल ने नौणी विवि से अपनी बीएससी वानिकी और एमएससी एग्रोफोरेस्ट्री की डिग्री पूरी की है। वह वर्तमान में यूनिवर्सिटी से एग्रोफोरेस्ट्री में पीएचडी कर रहे हैं। उनकी पोस्टर प्रस्तुति का शीर्षक-मोरस आधारित एग्रोफॉरेस्ट्री सिस्टम के तहत लेपिडियम सैटिवम के उत्पादन पर विभिन्न प्रकार की जैविक खाद का प्रभाव है। कुलपति डॉ. एचडी शर्मा ने कहा कि एक छात्र के लिए इस तरह के अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक आयोजन के लिए चुना जाना एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने उम्मीद जताई कि कृष्ण लाल न केवल संस्थान का प्रतिनिधित्व करेंगे बल्कि इस कार्यक्रम में बेहतरीन प्रदर्शन करेंगे। **साभार** ◆◆◆

नोट्रे-डेम डि पेरिस तथा अयोध्या का श्रीराम मन्दिर

गत। अप्रैल को सायंकाल पेरिस के प्रसिद्ध गिरिजाघर नोट्रे-डेम पेरिस की छत में आग लग गई। केथेड्रल गिरिजाघर की छत में लकड़ी लगी हुई थी इसलिए आग फैल गई और गिरजे को काफीनुकसान पहुंचा। आग बुझाने में ही। घंटे लग गये। सात सौ साल पुराने इस चर्च के ध्वस्त होने पर कई राष्ट्रों के प्रमुखों ने संवेदना संदेश भेजे। भारत के सभी समाचार-पत्रों में इस दुर्घटना का समाचार पहले पन्ने पर प्रकाशित हुआ। अंग्रेजी दैनिकों में तो कई दिनों तक इस गिरिजाघर के इतिहास, महत्व आदि पर लेख छपते रहे। विद्वान पत्रकारों ने यह भी बताया कि कौन-कौन से उपन्यास इस चर्च पर लिखे गये हैं। फ्रांस के लोगों ने दुर्घटना के बाद कुछ ही घंटों में सत्तर करोड़ यूरो। इस गिरजे के जीर्णोद्धार के लिए इक्कठे कर लिये। फ्रांस के राष्ट्रपति श्री मेक्रॉन ने वादा किया कि शीघ्र ही नोट्रे-डेम को पहले जैसा ही बना दिया जाएगा।

नोट्रे-डेम डि पेरिस का अर्थ है-अवर लेडी ऑफ पेरिस यानी पेरिस की महिला। चार सौ बीस फीट चौड़ा यह गिरिजाघर ईसाइयों के कैथोलिक सम्प्रदाय का है जिसके मुखिया वेटिकन रोम के पोप हैं। यह फ्रांस के कैथोलिकों का मुख्य चर्च है, इसलिए इसे केथेड्रल कहा जाता है। यह गिरिजाघर कैथोलिक पोप के यूरोप में सर्व-सत्ताधीश होने के समय सन् में बनना शुरू हुआ तथा वर्ष में पूरा हुआ। इसकी मीनारों की उंचाई। फीट है तथा छत में ओक के बड़े-बड़े कोई लट्ठे लगे हुए हैं। अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर सम्राट विक्रमादित्य ने दो हजार साल पहले जो मन्दिर बनवाया उस भव्य मन्दिर से नोट्रे-डेम की तुलना तो नहीं की जा सकती लेकिन दोनों स्थानों की परिस्थितियों की तुलना अवश्य हो सकती है। श्रीराम मन्दिर को कुषाण हमलावरों ने ध्वस्त किया तो मगध सम्राट पुष्यमित्र ने इसका जीर्णोद्वार कराया। फिर हूणों ने इसे नुकसान पहुंचाया तो गुप्त वंश के सम्राटों ने पुनर्निमाण कराया। 16वीं शताब्दी में विदेशी हमलावर बाबर के सेनापति मीर बाकी ने न केवल श्रीराम मन्दिर को ध्वस्त किया, बल्कि मन्दिर के अवशेषों से उसी स्थान पर एक ढांचा खड़ा कर दिया। हिन्दू वीरों के प्रबल प्रतिरोध के कारण मीर बाकी वहां मस्जिद नहीं बनवा सका। ढांचा तो बन गया, पर मस्जिद के लिये आवश्यक चार मीनारें वहां नहीं बन सकीं। नोट्रे-डेम ईसाइयों के एक पंथ कैथोलिक सम्प्रदाय का गिरिजाघर यानी पूजा-स्थल है। लेकिन वहां के राष्ट्रपति ने घोषणा की है कि कम से कम समय में इस केथेड्राल को फिर से वैसा का वैसा बना दिया जायेगा। प्रश्न उठता है कि क्या फ्रांस की सरकार सेकुलर नहीं है? और यदि सेकुलर है तो एक सम्प्रदाय के, एक रिलीजन विशेष के पूजा-स्थल को बनाने की गारण्टी कैसे दे रही है। इसका उत्तर यह है कि फ्रांस के लोग इसे राष्ट्रीय-स्मारक मानते हैं। यह गिरिजाघर गोथिक-शिल्प का एक शानदार नमूना है। प्रत्येक रविवार को केथेड्राल के बिशप इसमें सामूहिक प्रार्थना आयोजित करते हैं। लेकिन यह मात्र पूजा-स्थल ही नहीं है, फ्रांस के लोगों की यादें इसके साथ जुड़ी हैं, इतिहास इसके साथ जुड़ा है और इसलिये यह फ्रांस के राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रतीक है। ◆◆◆

येति के पदचिन्ह मिथक

हिममानव की मौजूदगी और देखे जाने क घटनाएं आए दिन सामने आती रहीं हैं। इसी क्रम में भारतीय सेना के पर्वतारोही दल को हिमालय के क्षेत्र नेपाल में मकालू आधार शिविर के नजदीक रहस्यमयी पदचिन्ह मिले हैं। सेना ने फोटो को ट्विटर पर पोस्ट कर यह जानकारी दी है। इन पैरों के निशान की माप 32.5 इंच है। येति या हिममानव एक पौराणिक प्राणी है। येति भारत, नेपाल और तिब्बत के हिमालयी क्षेत्रों के कई किवदंतियों और लोक कथाओं का हिस्सा है। माना जाता है कि येति दो पैरों वाला बंदर जैसा प्राणी है। हालांकि इसे कभी देखा नहीं गया है। लेकिन इसकी मौजूदगी के कुछ चिन्ह मिलते रहते हैं। वही वैज्ञानिक मानते हैं कि ऐसा कोई प्राणी मौजूद नहीं है। लेकिन पूर्व में भी पर्वतारोहियों और साहसी लोगों को भी असमान्य रूप से बड़े पैरों के निशान मिले हैं। इन्हें विभिन्न जानवरों जैसे एशियाई काले भालू या तिब्बती भूरा भालू के पैरों के निशान समझा गया है। अभी तक यह मिथक ही है। फिर भी एक बार येति को लेकर बहस का दौर चल पड़ा है। ◆◆◆

द्राभल जंगल को बचाने के लिए वन विभाग से गुहार

-खेम चन्द शास्त्री मण्डी

सदर उपमंडल के ग्राम पंचायत रंधाड़ा के तहत आते द्राभल जंगल को आग से बचाने के लिए वन विभाग से लोगों ने गुहार लगाई है। ग्राम पंचायत रंधाड़ा ने समाजसेवक परस राम के अनुरोध पर बकायदा प्रस्ताव पारित कर डीएफओ मंडी को भेजा गया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि जंगल में औषधीय पौधे हैं जिसमें हरड़, बेहड़ा, आंवला, दाड़ू, अखरोट, बिल्व पत्र के अलावा बिहूल, कचनार, रवीनिया इत्यादि के पौधे हैं तथा इन पौधों के बीच में चीड़ के पौधे भी हैं। चीड़ की सूखी पत्तियां जमीन पर गिर गई हैं और शरारती तत्व नशे में मदहोश होकर आग लगा देते हैं। गलती से कहीं चीड़ की पत्तियों में आग भडक् गई तो यह सारे औषधीय पौधे जलकर राख हो जाएंगे। उन्होंने डीएफओ मंडी से अनुरोध किया है कि इन चीड़ की पत्तियों को जल्द इकठ्ठा करवाया जाए ताकि हरे-भरे जंगल को आग से बचाया जा सके। गौरतलब है कि द्राभल जंगल में वन विभाग के साथ-साथ स्थानीय लोगों व समाज सेवक परस राम ने बड़े पैमाने पर जंगल में औषधीय पौधों का रोपण किया है। यही नहीं जंगल में फलदार पौधों को भी रोपा गया है जिसमें अमरुद, आम व अन्य पौधे शामिल हैं। इन पौधों की बदौलत जंगली जानवर खेतों में नहीं आते तथा बंदरों से भी लोगों ने इस योजना को अपनाकर निजात पाई है। समाजसेवक परस राम ने बताया कि कुछ साल पूर्व जंगल में आग लगी थी तथा उसे बुझाने के लिए स्थानीय लोगों ने बड़ा प्रयास किया मगर उस समय चीड़ की पत्तियों के कारण आग पर काबू नहीं पाया जा सका था तथा जंगल जलकर राख हो गया था। वन विभाग समय रहते इन चीड़ की पत्तियों को इकठ्ठा कर लेता है तो जंगल आग से बच सकता है। गलती से किसी ने आग लगा दी तो यह सारे औषधीय पौधे जल जाएंगे जिससे पर्यावरण के लिए भी बहुत बड़ा नुकसान होगा। उन्होंने बताया कि पंचायत ने जो प्रस्ताव पारित किया है उसकी कॉपी वन विभाग को दे दी गई है तथा वन विभाग अब यह सुनिश्चित करे कि जंगल को आग से कैसे बचाना है तथा चीड़ की पत्तियों को कैसे इकठ्ठा करवाना है। उधर ग्राम पंचायत रंधाड़ा की प्रधान प्रेमी देवी ने बताया कि पंचायत ने एकमत से प्रस्ताव पारित किया है कि द्राभल जंगल को आग से बचाने के लिए चीड़ की पत्तियों को वन विभाग इकठ्ठा करे। ◆◆◆

!! राष्ट्रवादी शक्तियों की अभूतपर्व महाविजय पर कोटि-कोटि शुभकामनाएँ !!

AN ISO 9001:2008 CERTIFIED CO.

JAS-ANZ

M5340812IN

SSI

महावीर प्रसाद मित्तल

Mob. : 9312243431, 9212243431

® 2133418

देवभूमि

सेब की पेटियों के निर्माता

(हिमाचल) **सुरेश परमार** (M) 7018415620, 8894904578, 94592326598

(कालका)	(कालका)	(दिल्ली)
मयंक मित्तल	**अवधेश मित्तल**	**राजीव गुप्ता**
9654276288	8510010941	9650513642

महावीर पैकेजिंग इन्डस्ट्रीज

e-mail : mpackg@gmail.com • facebook.com/mahavirpackaging

visit us : www.mahavirpackagingindustry.com

अंधकार में डूबे लोगों को थमाई रोशनी की मशाल

... -विजय लक्ष्मी सिंह

फैनी का इटालियन भाषा में अर्थ होता है मुक्त! 200 कि.मी प्रति घंटे से भी अधिक गति की इन बेलगाम हवाओं ने उडीसा में जो कहर बरपाया है वो हम सब की कल्पना से भी परे है। कटक, भुवनेश्वर, खुर्दा, पुरी समेत, पांच जिलों के अधिकांश कस्बे अंधेरे में डूब गए है। एक लाख 56 हजार बिजली के पोल उखड़ गए हैं। डेढ़ करोड़ से अधिक नारियल के पेड़ इन तेज हवाओं से तहस-नहस हो गए हैं। गांव के गरीब किसानो के पास न खेती बची न घर। 64 लोगों व 65,000 मवेशियों को ये भयावह चक्रवात लील गया। बिना छत के मकानों में अपना सब कुछ गंवा बैठे लोगों को सहारा देने सबसे पहले पहुंचे उत्कल विपन्न सहायता समिति के स्वयंसेवक।

उड़ीसा में उत्कल विपन्न सहायता समिति के 1500 से अधिक स्वयंसेवकों ने 5 मई से आज तक पीड़ितों की मदद के लिए दिन-रात एक कर दिया। समिति द्वारा चलाए जा रहे 15 राहत शिविरों में अब तक 96000 से अधिक लोगों को खाना खिलाया जा चुका है। टैम्परारी छत यानी 1।2 लाख तारपोलीन देकर इनके परिवारों को जून की बारिश से बचाने का यत्न किया है। समिति के सदस्य बिजाय स्वाईन बताते हैं कि जरूरतें बहुत बडी हैं व संसाधन कम है।महामारी से बचने के लिए 4,00,000 मॉस्किटो बांटने के बाद भी हम महज 4 प्रतिशत लोगों की मदद कर पाए है। दूरस्थ गांव हो या पुरी व कटक व भुवनेश्वर की झुग्गियां हर घर तक सोलर लैंप पहुंचाने है।

भुवनेश्वर से 25 किलोमीटर दूर बसे छोटे से गांव बालीपटना को ही लें। इस क्षेत्र की प्रमुख नकदी फसल पान पूरी तरह से तबाह हो गई। इस मुस्लिम बहुल गांव के लोगों का बुरा हाल था ऐसे ही एक परिवार में जब समिति के लोग छत के लिए तारपोलीन, पहनने के लिए कपड़े व मच्छरदानी लेकर पहुंचे तो सैफुद्दीन खान की आंखों से आंसू बह निकले यह गरीब किसान रोते-रोते कहने लगा आज तक मैं संघवालों को अपना दुश्मन समझता था। पर सबसे पहले यही लोग हमारी मदद के लिए पहुंचे।

इस आपदा से पहुंचे नुकसान की भरपाई राहत सामग्री भर जुटा देने से नहीं हो पाएगी। पीड़ितों के पुनर्वास के लिए सतत् कार्य करना होगा। क्षेत्र सेवा प्रमुख जगदीश आगामी योजना पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि हम रोजगार पर विशेष ध्यान दे रहे हैं, इन परिवारों को नारियल, सुपारी, पोलांग व काजू के पेड़ लगा कर दिए जाएंगे। जो परिवारों की आमदनी का जरिया बनेंगे। परती छोड़ी गई सरकारी जमीन पर चंदन के पेड़ लगाए जाएंगे। बारिश आने से पहले हर घर को प्लास्टिक की छत मुहैया कराई जाएगी। चक्रवात ने समुद्र के किनारे लगने वाले लंबे पेड़ जिन्हें हम झूम जंगल कहते हैं वह नष्ट कर दिए हैं। जिसके कारण मौसमी हवाएं सीधे नगर में प्रवेश कर सकती हैं। इन जंगलो को पुन: विकसित करने की योजना भी संघ ने बनाई है। जीविका के लिए 50 परिवारों को नाव दी गई है। नावें जुटाने का प्रयास भी किया जा रहा है। पान की खेती पर निर्भर रहने वाले 600 परिवारों के पुनर्वास के भी प्रयास किए जाएंगे। 14 एम्बुलेंस के साथ दिन और रात यूबीएसएस से जुड़े डॉक्टर और स्वास्थ्य कार्यकर्ता की टीम ने इन क्षेत्रों में महामारी फैलने से तो बचा लिया किंतु निरंतर प्राथमिक उपचार के लिए भी केंद्र विकसित किए जाएंगे। ◆◆◆

With Best Compliments from:

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

मंत्री का सुरमा राज

बहुत समय पहले की बात है, एक शहर में एक राजा रहता था। उस राजा को अपने सभी नगरवासियों से बहुत लगाव और प्रेम था। वह सबकी मदद करने के लिए तत्पर रहता। एक सुबह राजा के यहाँ पर एक फ़क़ीर आया, उसने राजा की खातिरदारी और ईमानदारी देखकर राजा को एक चुटकी जितना सुरमा दिया और कहा कि हे राजन, यह सुरमा कोई सामान्य सुरमा नहीं है, यह चमत्कारी सुरमा है।

फ़क़ीर ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा कि राजन इस सुरमे को जो भी नेत्रहीन अपनी आँखों में लगाएगा उसका अंधापन दूर हो जाएगा और वह फिर से देखने लगेगा। इतना कहकर फ़क़ीर तो राजा को सुरमा देकर अपनी राह पर निकल पड़ा। राजा ने सोचा कि हमारे राज्य में नेत्रहीनों की संख्या तो बहुत ज्यादा है और सुरमे की मात्र भी इतनी है कि सिर्फ एक आदमी ही इस सुरमे को अपनी आँखों में डाल सकता है तो क्यूँ न ऐसे आदमी को यह सुरमा दिया जाए जो हर तरह से इसके लायक हो, इसलिए राजा ने अपने अतिप्रिय आदमी को ही सुरमा देने का निश्चय किया।

राजा को तभी अपने इमानदार और प्रमाणिक वृद्ध मंत्री का ख्याल आया। उस मंत्री ने पूरी उम्र ईमानदारी और निष्ठा से राज्य की सेवा की थी, पर दोनों आँखों में तेज चले जाने से मंत्रीको राजकार्य में से विदा लेनी पड़ी। अभी तक राजा को उस मंत्री की कमी महसूस हो रही थी। राजा ने सोचा कि यदि मंत्री की रौशनी वापस आ जाये तो फिर से राज्य को मंत्री की सही और अनुभव भरी सेवा मिल सकती है, इसलिए राजा ने तनिक भी विचार किये बिना ही मंत्री को बुलाया और उनके हाथ में सुरमे की डिब्बी देकर कहा कि 'यह सुरमा आप अपनी दोनों आँखों में लगा दो, यह चमत्कारी सुरमा है इसको आँखों में लगाने से आपकी दृष्टि वापिस आ जाएगी पर यह सुरमा इतना ही है कि इसे सिर्फ दो आँखों में ही लगा सकते हैं।' मंत्री ने अपनी एक आंख में सुरमा डाला और उस आंख की रोशनी वापस लौट आई। उसके बाद बाकी बचे सुरमे को मंत्री ने अपनी जीभ पर रख दिया। सब लोगों ने सोचा कि मंत्री पागल हो गया है और राजा ने भी उससे कहा कि मंत्री यह आपने क्या किया अब आप एक आंख से नहीं देख सकोगे और सभी प्रजाजन आपको काणा कहकर बुलाएँगे।

मंत्री ने राजा को प्यार से अपनी वाणी से समझाया कि हे राजन आप तनिक भी चिंता न करें, मैं बिल्कुल भी काणा नही रहूँगा। मेरी दोनों आँखों की रौशनी वापिस आ जाएगी। इससे ज्यादा मैं सभी नेत्रहीनों को भी रोशनी दे सकूँगा। मंत्री ने अपना राज खोलते हुए कहा कि राजन यह सुरमा चखकर मैंने इसको बराबर परख लिया कि यह किससे बना है, अब यह सुरमा बनाकर में सभी नेत्रहीन नगरवासियों का अंधापन दूर कर सकूँगा। मंत्री की यह बात सुनकर राजा प्रसन्न हो गए और मंत्री को कहा 'यह मेरा और इन नगरवासियों का सौभाग्य है जो हमें आपके जैसा राज्यमंत्री मिला है, जो केवल अपना न सोचकर सभी का ख्याल करता है।' **साभार: वेब दुनिया** ◆◆◆

पुजारी का आखिरी प्रहार

किसी दूर गाँव में एक पुजारी रहते थे जो हमेशा धर्म कर्म के कामों में लगे रहते थे। एक दिन किसी काम से गांव के बाहर जा रहे थे तो अचानक उनकी नज़र एक बड़े से पत्थर पे पड़ी। तभी उनके मन में विचार आया कि कितना विशाल पत्थर है? क्यूँ ना इस पत्थर से भगवान की एक मूर्ति बनाई जाये। यही सोचकर पुजारी ने वो पत्थर उठवा लिया। गाँव लौटते हुए पुजारी ने वो पत्थर का टुकड़ा एक मूर्तिकार को दे दिया, जो बहुत ही प्रसिद्ध मूर्तिकार था। अब मूर्तिकार जल्दी ही अपने औजार लेकर पत्थर को काटने में जुट गया। जैसे ही मूर्तिकार ने पहला वार किया, उसे एहसास हुआ की पत्थर बहुत ही कठोर है। मूर्तिकार ने एक बार फिर से पूरे जोश के साथ प्रहार किया लेकिन पत्थर टस से मस भी नहीं हुआ। अब तो मूर्तिकार का पसीना छूट गया वो लगातार हथौड़े से प्रहार करता रहा लेकिन पत्थर नहीं टूटा। उसने लगातार 99 प्रयास किये लेकिन पत्थर तोड़ने में नाकाम रहा। अगले दिन जब पुजारी आये तो मूर्तिकार ने भगवान की मूर्ति बनाने से मना कर दिया और सारी बात बताई। पुजारी जी दुखी मन से पत्थर वापस उठाया और गाँव के ही एक छोटे मूर्तिकार को वो पत्थर मूर्ति बनाने के लिए दे दिया। अब मूर्तिकार ने अपने औजार उठाये और पत्थर काटने में जुट गया, जैसे ही उसने पहला हथोड़ा मारा पत्थर टूट गया क्यूंकि पत्थर पहले मूर्तिकार की चोटों से काफी कमजोर हो गया था।पुजारी यह देखकर बहुत खुश हुआ और देखते ही देखते मूर्तिकार ने भगवान शिव की बहुत सुन्दर मूर्ति बना डाली। पुजारी मन ही मन पहले मूर्तिकार की दशा सोचकर मुस्कुराये कि उस मूर्तिकार ने 99 प्रहार किये और थक गया, काश उसने एक आखिरी प्रहार भी किया होता तो वो सफल हो गया होता। ◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. हिमाचल प्रदेश के मंडी ज़िले में स्थित नमक की खानें किसके नियंत्रण में है?
2. हिमाचल प्रदेश में काला जीरा कहाँ पर पैदा किया जाता है?
3. हिमाचल प्रदेश के किस स्थान पर भूरी लसह संग्रहालय स्थित है?
4. हिमाचल प्रदेश में चाय की कौन सी किस्म नहीं उगाई जाती है?
5. वर्तमान में भारत का वित्त मंत्री कौन हैं?
6. किस राजा ने मनाली में हिडिम्बा मंदिर बनवाया था?
7. हिमाचल प्रदेश के रंगमहल का निर्माण किसने किया था?
8. शिमला को किस वर्ष ज़िला बनाया गया था?
9. 17वीं लोकसभा का सबसे कम उम्र का सांसद कौन है?
10. वर्तमान में भारत के रक्षा मंत्री कौन हैं।

पहेली

1. मेरे चार पैर हैं फिर भी मैं चल नहीं सकती हूँ और न ही बिना हिलाए हिल सकती हूँ लेकिन मैं सबको आराम जरूर देती हूँ। बताओ मैं कौन हूँ ?
2. न मैं दिख सकती हूँ, न मैं बिक सकती हूँ और न ही मैं गिर सकती हूँ, बताओ मैं कौन हूँ ?
3. ऐसी कौन सी चीज है जिसे हम निगलें तो जिन्दा रह पाएँ लेकिन अगर वो हमें निगले तो हम मर जाएँ ?
4. ऐसा कौन सा व्यक्ति है जो सौ लोगों को मार दे फिर भी उसको सजा नहीं हो सकती?
5. एक बच्चा लाहौर में पैदा हुआ फिर भी वह पाकिस्तानी नहीं है।
6. वह कौन है जो दिन में होता है लेकिन रात में नहीं?

उत्तर: 1.कुर्सी, 2. हवा, 3. हवा, 4. जल्लाद, 5. 1947 से पहले पैदा हुआ, 6. सूरज

चुटकुले

1. पहला– वैसे आज पेपर कौन सा था?
दूसरा– मैथ्स का।
पहला– इसका मतलब तू पेपर करके आया है?
पहला– नहीं यार, साथ वाले के पास कैल्क्युलेटर देखा था।

2. शहर की लड़की की शादी गांव में हो गई।
लड़की की सासु मां ने उसे भैंस को घास डालने को बोला।
भैंस के मुंह में झाग देखकर लड़की वापस आ गई।
सासू मां बोली– क्या हुआ बहू?
लड़की बोली– भैंस अभी ब्रश कर रही है मां जी।

3. राजनीति के बारे में ज्ञान देने वाले पांच महान विश्वविद्यालय
1– पान की दूकान
2– नाई की दुकान
3– शराब पिया हुआ आदमी
4– ट्रेन का जनरल डिब्बा
5- Whatsapp

पोलीटून्स

हमारा संकल्प बनाएंगे आपका बेहतर कल
Sankalp Classes Announce Admission For
DROPPER BATCH
JEE (Main) JEE (Advance) NEET Preparation
NEET SELECTIONS 2017-18
Manish Thakur (MBBS Chamba)
Pooja Bhardwaj (MBBS IGMC Shimla)
Shubham Patiyal (MBBS Chamba)
Aashish (MBBS LBSMC Ner Chowk)
Niharika (MBBS Hamirpur)
Ajit Thakur MBBS Nahan
Selection in NEET
2016 5
2017 5
2018 6
NEET SELECTIONS 2016-17
Amol Sharma
Sonam
Krishan Thakur
Pooja
Lalita
NEET SELECTIONS 2015-16
Aditya Karan Pathania MBBS GMC Chandigarh
Anil Rana MBBS IGMC Shimla
Manjul Thakur MBBS Dr RPMC Tanda 2nd Position in HP BAMS
Pratima MBBS GMC Nahan HP Veterinary
Kamal Kant MBBS
JEE
2019
8
Highest Percentile
98.5%
97%
94%
मेडिकल
NEET, AIIMS
& Other Medical Entrance Exams
कक्षा XI से XII में तथा X से XI में जाने वाले विद्यार्थियों के लिए
इंजीनियरिंग
JEE (Main & Advance
& Other Engg. Entrance Exams
कक्षा XI से XII में तथा X से XI में जाने वाले विद्यार्थियों के लिए
फाउण्डेशन्स
NTSE, Olympiads / School & Board Exams
कक्षा XI से XII में तथा X से XI में जाने वाले विद्यार्थियों के लिए
टैस्ट सीरीज़ कोर्स
For NEET & AIIMS / JEE (Main & Advance) / other Medical & Engineering Exams
कक्षा XI, XII में अध्ययनरत् / उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए
★ क्रैश कोर्स
For NEET & AIIMS / JEE (Main & Advance) / other Medical & Engineering Exams
कक्षा XII में अध्ययनरत् / उत्तीर्ण विद्यार्थियों के लिए
Sankalp CAREER FORUM
श्रमेव जयते
Resolution to excel in Competition
SANKALP CLASSES
(AN INSTITUTION FOR JEE Main/JEE Advance/NEET ASPIRANTS)
Address : Opp. Patanjali Chikitsalaya (Old Valley Public School) Shri Guru Nanak Market
Nerchowk, Distt. Mandi (H.P.)-175008
Mob. : 98050-10058, 86790-50003, Ph. : 01905-241958, Email: sankalpclasses58@gmail.com

MAHARAJA AGRASEN UNIVERSITY

Atal Shiksha Kunj, Pinjore Nalagarh Highway, Nanakpur Kalujhanda, Barotiwala, Distt. Solan-HP 174 103

ADMISSIONS 2019-20

ENGINEERING

B.Tech

ME CSE CE ECE EEE
& LEET AICTE Approved

M.Tech

CSE CE ECE

SPECIAL SCHOLARSHIPS

For Needy & Brilliant B.Tech, M.Tech Engg. Students

Upto 100% Scholarships Equivalent to Tution Fee
Relaxation upto 100% in Security

- 100% for marks above 95%
- 50% for marks 80% to below 95%

(Decision of the University will be final for Scholarships)
*T&C Apply

BEST UNIVERSITY OF THE YEAR 2018 Adjudged by ITWA

BHE AWARD 2017 Adjudged by Group of HEI

CCI TECHNOLOGY EDUCATIONAL EXCELLENCE AWARD 2014 Conferred by GTU

MANAGEMENT

B.Com B.Com (H) BBA BHMCT
MBA MTTM M.Com

Special Scholarships for BHMCT & MTTM Students

LAW

BA LLB B.Com LL.B
LLB BCI Approved LL.M

PHARMACY

D.Pharm B.Pharm PCI Approved

BASIC AND APPLIED SCIENCES

BCA B.Sc Medical Non-Medical
M.Sc PCM Bio-Tech Zoology

Applications are Invited from the Eligible Candidates for the following Ph.D Programmes

Hospitality & Tourism Physics Mathematics Environmental Science
Zoology Law Mechanical Engg. Civil Engg.

For more details visit: **www.mau.ac.in**

Last date to apply : July 01, 2019
Ent. Test followed by Interview : July 06, 2019 10 AM

Admission Helpline: 093180-29217, 18, 35, 38, 45

info@mau.ac.in admission@mau.ac.in

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on: | | | YouTube | |

Posting Date:
1st & 5th of the Month